भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 20 | उदयपुर सोमवार 01 नवम्बर 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सौ साल बाद सौ करोड़ टीकों से भारत विश्व कीर्तिमान पर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी -

जहां एक ओर भारत ने 100 करोड़ खुराक का अविश्वसनीय या जादुई आंकड़ा सफलतापूर्वक पार कर लिया है, वहीं दूसरी ओर दर्जनों देश अब भी अपने यहां टीकों की आपूर्ति की बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे हैं! भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में सिर्फ उत्पादन करना ही काफी नहीं है। इसके लिए अंतिम व्यक्ति तक को टीका लगाने और निर्बाध लॉजिस्टिक्स पर भी फोकस होना चाहिए। हमारा देश 'टीम इंडिया' की वजह से आगे बढ़ रहा है और यह 'टीम इंडिया' हमारे 130 करोड़ लोगों की एक बड़ी टीम है। जनभागीदारी लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है। यदि हम 130 करोड़ भारतीयों की भागीदारी से देश चलाएंगे तो हमारा देश हर पल 130 करोड़ कदम आगे बढ़ेगा। 'लोकतंत्र हर उपलब्धि हासिल कर सकता है'।

भारत ने टीकाकरण की शुरुआत के मात्र 9 महीनों बाद ही 21 अक्टूबर, 2021 को टीके की 100 करोड़ खुराक का लक्ष्य हासिल कर लिया है। कोविड -19 से मुकाबला करने में यह यात्रा अद्भुत रही है। विशेषकर जब हम याद करते हैं कि 2020 की शुरुआत में परिस्थितियां कैसी थीं। मानवता 100 साल बाद इस तरह की वैश्विक महामारी का सामना कर रही थी और किसी को भी इस वायरस के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। हमें यह स्मरण होता है कि उस समय स्थिति कितनी अप्रत्याशित थी, क्योंकि हम एक अज्ञात और अदृश्य दुश्मन का मुकाबला कर रहे थे, जो तेजी से अपना रूप भी बदल रहा था।

चिंता से आश्वासन तक की यात्रा पूरी हो चुकी है और दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान के फलस्वरूप हमारा देश और भी मजबूत होकर उभरा है। इसे वास्तव में एक भगीरथ प्रयास मानना चाहिए, जिसमें समाज के कई वर्ग शामिल हुए हैं। पैमाने का अंदाजा लगाने के लिए, मानलें कि प्रत्येक टीकाकरण में एक स्वास्थ्यकर्मी को केवल 2 मिनट का समय लगता है। इस दर से, इस उपलब्धि को हासिल करने में लगभग 41 लाख मानव दिवस या लगभग 11 हजार मानव वर्ष लगे।

गति और पैमाने को प्राप्त करने तथा इसे बनाए रखने के किसी भी प्रयास के लिए, सभी हितधारकों का विश्वास महत्वपूर्ण है। इस अभियान की सफलता के कारणों में से एक, वैक्सीन तथा बाद की प्रक्रिया के प्रति लोगों का भरोसा था, जो अविश्वास और भय पैदा करने के विभिन्न प्रयासों के बावजूद कायम रहा।

हम लोगों में से कुछ ऐसे हैं, जो दैनिक जरूरतों के लिए भी विदेशी ब्रांडों पर भरोसा करते हैं। हालाँकि, जब कोविड -19 वैक्सीन जैसी महत्वपूर्ण बात सामने आयी, तो देशवासियों ने सर्वसम्मति से 'मेड इन इंडिया' वैक्सीन पर भरोसा किया। यह एक महत्वपूर्ण मौलिक बदलाव है।

भारत का यह टीका अभियान इस बात का एक उदाहरण है कि अगर यहां के नागरिक और सरकार जनभागीदारी की भावना से लैस होकर एक साझा लक्ष्य के लिए मिलकर साथ आएं, तो यह देश क्या कुछ हासिल कर सकता है। जब भारत ने अपना टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया, तो 130 करोड़ भारतीयों की क्षमताओं पर संदेह करने वाले कई लोग थे। कुछ लोगों ने कहा कि भारत को 3-4 साल लगेंगे। कुछ अन्य लोगों ने कहा कि लोग टीकाकरण के लिए आगे नहीं आएंगे। कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होंने कहा कि टीकाकरण प्रक्रिया घोर कुप्रबंधन और अराजकता की शिकार होगी। कुछ ने तो यहां तक कह दिया कि भारत सप्लाई चेन को व्यवस्थित नहीं कर पाएगा लेकिन जनता कर्फ्यू और उसके बाद के लॉकडाउन की तरह, भारत के लोगों ने यह दिखा दिया कि अगर उन्हें भरोसेमंद साथी बनाया जाए तो परिणाम कितने शानदार हो सकते हैं।

जब हर कोई जिम्मेदारी उठा ले, तो कुछ भी असंभव नहीं है। हमारे स्वास्थ्यकर्मियों ने लोगों

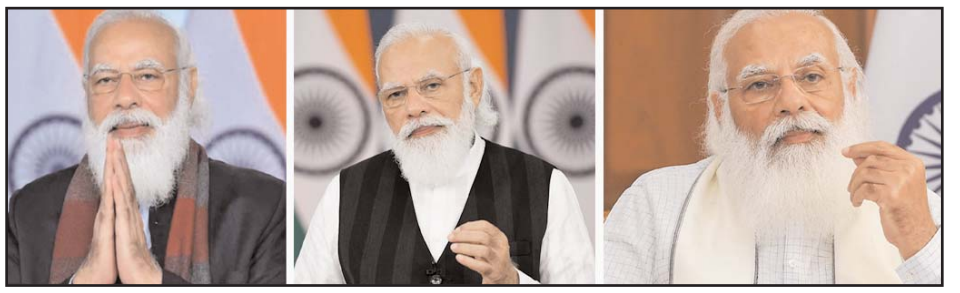

को टीका लगाने के लिए कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में पहाड़ियों और नदियों को पार किया। हमारे युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, स्वास्थ्यकर्मियों, सामाजिक एवं धार्मिक नेताओं को इस बात का श्रेय जाता है कि टीका लेने के मामले में भारत को विकसित देशों की तुलना में बेहद कम हिचकिचाहट का सामना करना पड़ा है।

अलग-अलग हितों से संबद्ध विभिन्न समूहों की ओर से टीकाकरण की प्रक्रिया में उन्हें प्राथमिकता देने का काफी दबाव था लेकिन सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि हमारी अन्य योजनाओं की तरह ही टीकाकरण अभियान में भी कोई वीआईपी संस्कृति नहीं होगी।

वर्ष 2020 की शुरुआत में जब दुनिया भर में कोविड -19 फैल रहा था, तो हमारे सामने यह बिल्कुल स्पष्ट था कि इस महामारी से अंतत: टीकों की मदद से ही लड़ना होगा। हमने जल्दी तैयारी शुरू कर दी। हमने विशेषज्ञ समूहों का गठन किया और अप्रैल 2020 से ही एक रोडमैप तैयार करना शुरू कर दिया।

आज तक केवल कुछ चुनिंदा देशों ने ही अपने स्वयं के टीके विकसित किए हैं। 180 से भी अधिक देश टीकों के लिए जिन उत्पादकों पर निर्भर हैं वे बेहद सीमित संख्या में हैं। यही नहीं, जहां एक ओर भारत ने 100 करोड़ खुराक का अविश्वसनीय या जादुई आंकड़ा सफलतापूर्वक पार कर लिया है, वहीं दूसरी ओर दर्जनों देश अब भी अपने यहां टीकों की आपूर्ति की बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे हैं! जरा कल्पना कीजिए कि यदि भारत के पास अपना टीका नहीं होता तो क्या होता। भारत अपनी इतनी विशाल आबादी के लिए पर्याप्त संख्याा में टीके कैसे हासिल करता और इसमें आखिरकार कितने साल लग जाते? इसका श्रेय निश्चित रूप से भारतीय वैज्ञानिकों और उद्यमियों को दिया जाना चाहिए जिन्होंने इस बेहद कठिन चुनौती का सफलतापूर्वक सामना करने में अपनी ओर से कोई भी कसर नहीं छोड़ी। उनकी उत्कृष्ट प्रतिभा और कड़ी मेहनत की बदौलत ही भारत टीकों के मामले में वास्तव में 'आत्मनिर्भर' बन गया है। इतनी बड़ी आबादी के लिए टीकों की व्यापक मांग को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए हमारे टीका निर्माताओं ने अपना उत्पादन स्तर वृहद रूप से बढ़ाकर यह साबित कर दिया है कि वे किसी से भी कम नहीं हैं।

एक ऐसे राष्ट्र में जहां सरकारों को देश की प्रगति में बाधक माना जाता था, हमारी सरकार इसके बजाय बड़ी तेजी से देश की प्रगति सुनिश्चित करने में सदैव अत्यंत मददगार रही है। हमारी सरकार ने पहले दिन से ही टीका निर्माताओं के साथ सहभागिता की और उन्हें संस्थागत सहायता, वैज्ञानिक अनुसंधान एवं आवश्यटक धनराशि मुहैया कराने के साथ-साथ नियामकीय प्रक्रियाओं को काफी तेज करने के रूप में भी हरसंभव सहयोग दिया। 'संपूर्ण सरकार' के हमारे दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप सरकार के सभी मंत्रालय वैक्सीन निर्माताओं की सहूलियत और किसी भी तरह की अड़चन को दूर करने के लिए एकजुट हो गए।

भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में सिर्फ उत्पादन करना ही काफी नहीं है। इसके लिए अंतिम व्यक्ति तक को टीका लगाने और निर्बाध लॉजिस्टिक्स पर भी फोकस होना चाहिए। इसमें निहित चुनौतियों को समझने के लिए जरा इसकी कल्पना करें कि टीके की एक शीशी को आखिरकार कैसे मंजिल तक पहुंचाया जाता है। पुणे या हैदराबाद स्थित किसी दवा संयंत्र से निकली शीशी को किसी भी राज्य के हब में भेजा जाता है, जहां से इसे जिला हब तक पहुंचाया जाता है। फि?र वहां से इसे टीकाकरण केंद्र पहुंचाया जाता है। इसमें विमानों की उड़ानों और ट्रेनों के जरिए हजारों यात्राएं सुनिश्चित करनी पड़ती हैं। टीकों को सुरक्षित रखने के लिए इस पूरी यात्रा के दौरान तापमान को एक खास रेंज में बनाए रखना होता है, जिसकी निगरानी केंद्रीय रूप से की जाती है। इसके लिए 1 लाख से भी अधिक शीत-श्रृंखला (कोल्ड-चेन) उपकरणों का उपयोग किया गया। राज्यों को टीकों के वितरण कार्यक्रम की अग्रिम सूचना दी गई थी, ताकि वे अपने अभियान की बेहतर योजना बना सकें और टीके पूर्व-निर्धारित तिथि को ही उन तक सफलतापूर्वक पहुंच सकें। अत: स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह निश्चित रूप से एक अभूतपूर्व प्रयास रहा है।

इन सभी प्रयासों को कोविन के एक मजबूत तकनीकी मंच से जबर्दस्त मदद मिली। इसने यह सुनिश्चित किया कि टीकाकरण अभियान न्यायसंगत, मापनीय, ट्रैक करने योग्य और पारदर्शी बना रहे। इसने सुनिश्चित किया कि टीकाकरण के काम में कोई पक्षपात या बिना पंक्ति के टीका लगवाने की कोई गुंजाइश ना हो। इसने यह भी सुनिश्चित किया कि एक गरीब मजदूर अपने गांव में पहली खुराक ले सकता है और उसी टीके की दूसरी खुराक तय समय अंतराल पर उस शहर में ले सकता है जहां वह काम करता है। टीकाकरण के काम में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए रियल-टाइम डैशबोर्ड के अलावा, क्यूआर-कोड वाले प्रमाणपत्रों ने सत्यापन को सुनिश्चित किया। इस तरह के प्रयासों का न केवल भारत में बल्कि दुनिया में भी शायद ही कोई उदाहरण मिले।

2015 में अपने स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में मैंने कहा था कि हमारा देश 'टीम इंडिया' की वजह से आगे बढ़ रहा है और यह 'टीम इंडिया' हमारे 130 करोड़ लोगों की एक बड़ी टीम है। जनभागीदारी लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है। यदि हम 130 करोड़ भारतीयों की भागीदारी से देश चलाएंगे तो हमारा देश हर पल 130 करोड़ कदम आगे बढ़ेगा। हमारे टीकाकरण अभियान ने एक बार फिर इस 'टीम इंडिया' की ताकत दिखाई है। टीकाकरण अभियान में भारत की सफलता ने पूरी दुनिया को यह भी दिखाया है कि 'लोकतंत्र हर उपलब्धि हासिल कर सकता है'।

मुझे उम्मीद है कि दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान में मिली सफलता हमारे युवाओं, हमारे शोधकर्ताओं और सरकार के सभी स्तरों को सार्वजनिक सेवा वितरण के नए मानक स्थापित करने के लिए प्रेरित करेगी जो न केवल हमारे देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए भी एक मॉडल होगा।

पोथीखाना

राजस्थान के दुर्ग का आंखों देखा हाल

राजस्थान की धरती पूरे विश्व में अनूठी, अजूबी, अद्‌भुत तथा अलबेली रही है। यहां का कोई दुर्ग ऐसा नहीं मिलेगा जो खण्डहरों का वैभव लिए मुंहबोला न हो। इनका जर्रा-जर्रा इतिहास की, शौर्य की, बांके वीरों, सतियों, युद्धोन्मादों, साहस तथा शूरत्व की अकथ, अखूट, अमिट तथा अमर्त्य गाथा का धनी रहा है।

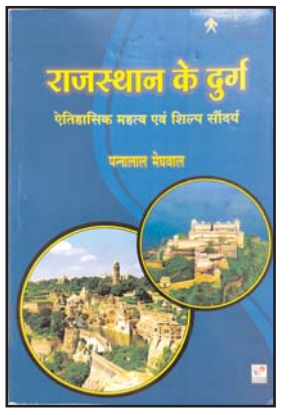

ये दुर्ग तलवारों के धनी रहे हैं तो कलमों के साक्षी भी। अब तक इन पर जितना जो कुछ लिखा गया उससे सहस्त्र गुना अधिक लेखा तो हुआ ही नहीं। रहस्य रोमांच के वैचित्र्य की अनेक गाथा-घटनाओं की परतें कभी खुल भी नहीं पायेंगी। देवशक्ति के सहारे मैंने 'गढ़ तो चित्तौड़गढ़' कहे जाने वाले चित्रकूट चित्तौड़ का प्रति दीवाली की अर्द्धरात्रि को लगने वाला भूतों का मेला, बैकुण्ठ चतुर्दशी की रात्रि को लगने वाला दिव्यात्माओं का नितान्त अदृश्य मेला भी देखा जिसमें अन्य लोकों से भेष बदलकर अनेक अनोखेलाल अपना प्रदर्शन करते देखे जाते हैं।

सत्रह तो यहां जौहर ही हुए। लकड़ियां जब जलाने को नहीं रहीं तो दासियों ने कटार जौहर कर लाशों की एक मगरी ही खड़ी कर दी। जौहर कुण्ड ही यहां का ऐसा है जहां वीरांगनाओं की सतीत्व रक्षा का तेज प्रदीप्त हुए अपना तेज विकीर्ण कर रहा है। जगह-जगह मैदानों, खण्डहरों, महलों, हवेलियों में अभी भी इतने खजाने दबे पड़े हैं कि उनके अकूत धन से पूरा विश्व खरीदा जा सकता है पर हर खजाने पर अदृश्य पहरे लगे हैं जिन्हें छूना तो दूर कोई देख भी नहीं सकता।

सत्रह तो यहां जौहर ही हुए। कई की तो राख अभी भी दबी पड़ी है। राख की यह खासियत कही जाती है कि उसका रंग-रूप वैसा का वैसा बना रहता है। चित्रकूट पहले बसा। चित्रांगद मौर्य ने इसे बनवाया। बादशाह अकबर ने किले पर चढ़ने के लिए 'मोहर मगरी' का निर्माण कराया। आसपास के गांवों के सैंकड़ों मजदूर उमड़ पड़े। एक-एक टोकरी माटी की डालकर एक-एक मोहर पाने वाले मजदूर एक ओर से प्रवेश करते और जब दूसरी ओर से निकलते तो उनका सर कलम कर दिया जाता। ऐसे ही कटार जौहर के बाद लाशों की थड़ी देख अकबर को भारी पछतावा हुआ और फिर यहां आक्रमण नहीं किया। यहां पुरुषों के साथ-साथ सांगा की रानी जवाहरबाई द्वारा महिला सैनिक भी रहीं।

कुंभलगढ़ का किला देखते-देखते आंखें फटी-की-फटी रह जाती हैं। राणा कुंभा जितना तलवारबाज था उतना ही कलमबाज के रूप में ख्याति लिये है। रणथंभौर का किला लोकजीवन में रणतभंवर के नाम से जाना जाता है। विवाहोत्सव के प्रारम्भ में 'रणतभंवर रा आओ विनायक' के रूप में सर्वप्रथम यहीं के गणेशजी नूते जाते हैं। किले पर विनायक गणेशजी की बड़ी भव्य प्राचीन प्रतिमा है। उनके नाम से सैकड़ों कुमकुम पत्रिकाएं आती हैं। पुजारी एक-एक का वाचन कर गणपति देव को विवाह घर पधारने की अरजी करता है। यहां के गागरोन के तोते बहुत प्रसिद्ध हैं। ये मानव वाणी बोलने में बड़े पटु हैं।

ऐसे राजस्थान के मुख्य-प्रमुख 39 किलों के ऐतिहासिक महत्त्व एवं शिल्प-सौंदर्य का जानेमाने सुलेखक पन्नालाल मेघवाल ने कमनीय कलापक्षीय वर्णन किया है। यह वर्णन आंखों देखा हाल लिये बड़ा सजीव, सटीक, समयोचित और संश्लिष्ट बन पड़ा है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। अपने लेखकीय में लेखक ने यह ठीक ही लिखा- 'आज युग परिवर्तन के साथ हमारे स्वर्णिम अतीत की यह अनमोल सम्पदा तेजी से नष्ट होती जा रही है। कई गढ़ एवं दुर्ग तो खण्डहर हो चुके हैं। जो शेष हैं वे अपने अवसान की प्रतीक्षा में हैं। यदि समय रहते हमने इन बहुमूल्य धरोहरों की सारसंभाल, संरक्षण एवं संवर्धन नहीं किया तो वह दिन दूर नहीं जब ये सदा के लिए काल के गर्त में विलीन हो जाएंगे।'

पुस्तक- राजस्थान के दुर्ग, हिमांशु पब्लिकेशन्स, 464 हिरणमगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002, पृ. 182, मूल्य 325 रूपये।

राजस्थान के लोकगीत

राजस्थान के लोकगीत में सर्वाधिक चर्चित, सर्वाधिक लोकप्रिय और सर्वाधिक गाये जाने वाले लोकगीत हैं। लोकगीतों की जितनी पुस्तकें प्रकाशित हैं, अन्य किसी विधा की नहीं हैं। सर्वाधिक शोधाध्ययन भी इन्हीं पर हुआ है और प्रत्येक संस्कार, वार, त्यौहार, उत्सव और आनन्द के अवसरों पर ये ही सर्वाधिक गाये, बजाये, नाचे जाते हैं। सातवें दशक में इनके तीन संग्रह तो मेरे द्वारा ही प्रकाशित हुए। इनमें एक तो उन गीतों की स्वरलिपि तथा भावार्थ सहित था। अब तो ये अप्राप्य ही हैं। इनके अलावा हजारों गीत विविध जातियों, समुदायों से सुने और सैंकड़ों का रेकार्डिंग किया। कुछ संग्रह अप्रकाशित भी हैं।

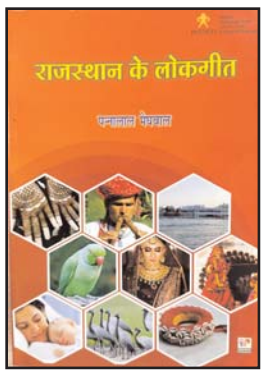

अनेक विद्वानों ने अनेक तरह से लोकगीतों का वर्गीकरण किया। दरबारियों, राजपरिवारों में प्रचलित गीत और सामान्यजन में प्रचलित गीत जुदा-जुदा हैं जो वहां की जीवनधर्मी संस्कृति, शाही और समृद्ध वातावरण और देशकाल से जुड़े हैं। ऐसे ही कृषिजनित जातियों, जनजातियों, घुमक्कड़ कबीलों के गीत जुदा हैं। बोली और वाणी भी इन गीतों की अपनी जुदा है।

ऐसे असंख्य गीतों की रचनाकार महिला शक्ति रही है। राजपरिवारों में तो गाने वाला वर्ग ही अलग था जो उठने, जागने से लेकर रात्रि को सोने तक के गीतों से मन बहलाव करता था। आजादी के बाद एकदम बदलाव आया तो उसका जबर्दस्त असर इन गीतों पर भी पड़ा। लगा जैसे उन सैंकड़ों पारम्परिक रीतिरिवाजों, नेगचारों और ठाठठसक की जीवनचर्या से जुड़े गीत गायब हो गये।

ऐसे ही बच्चों के गीत नदारद हो गये। अनेक संस्कारों के गीत हवा हो गये। घट्‌टी ऊंखल, छत कूटने, हल हांकने से लेकर कृषि से जुड़े गीत रफादफा हो गये। सैंकड़ों पारम्परिक गीतों की जगह नये बदलाव के, विकास के, परिवर्तन के, जमाने के, नई रोशनी के गीतों का चलन हो गया।

बैल संस्कृति की जगह ट्रेक्टर संस्कृति हावी हो गई। मोबाईल जैसे साधन सुलभ होने से पिया मिलन के, विरह के, ओल्यूं के गीत नहीं रहे। अधूरी उबड़खाबड़ पगडंडी की जगह फोर लेन, सिक्स लेन सड़क आ गई। हवाईयात्रा से अंचल में सिमटा लोक अन्तर्राष्ट्रीय हो गया और अन्तरिक्ष को भी कुरेदा जाने लगा। कौनसा क्षेत्र ऐसा है जहां जन ने ताल नहीं ठोकी।

तब भी हमारा चित्त हमारी अपनी धरोहर, हमारी अपनी विरासत, हमारी अपनी परम्परा का, परम्पराशील लोक का चित्त लिये अतीतजीवी भविष्यद्रष्टा बना हुआ है। इसीलिए हमें हमारा प्राचीन अच्छा लगता है। याद आता है और हम उसका पुनर्पाठ, पुनर्संस्करण, पुनरूद्धार, पुनर्उन्नयन, पुनर्विकास और पुनर्प्रकाशन कर सार्थक संतोषी बनते हैं।

इन्हीं उद्‌देश्यों से हमारे देश में अनेक संस्थान, केन्द्र, अकादमियां, मण्डल आदि प्रारम्भ हुए जिन्होंने लोकगीतों का प्रकाशन दिया। इसी कड़ी में इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फोर आर्ट एण्ड कल्चर हेरीटेज (इन्टेक) ने पन्नालाल मेघवाल के सम्पादन में राजस्थान के लोकगीत नाम से 271 गीतों का यह प्रकाशन दिया है। इसमें देवी-देवता के 23, जच्चा-बच्चा के 21, हल्दी-पीठी के 85, तीज-त्यौहार के 15 तथा छुटपुट 127 गीत हैं। पुरानी चाल के बहुत से गीत अब प्रचलन में नहीं हैं तो नई चाल के, चलन के गीत इसमें सम्मिलित नहीं हो पाये हैं।

इन गीतों की स्वरलिपियां, भावार्थ तथा विशेष शब्द सूचक टिप्पणियां भी नहीं हैं। यह मात्र संकलन है। अच्छा होता प्रारम्भ में लोकगीतपरक एक विस्तृत भूमिका होती ताकि अन्य अंचल तथा प्रान्त के निवासियों को भी इन गीतों की जानकारी के साथ ही तुलनात्मक अध्ययन करने में भी सहयोग मिलता। जो भी हो, एक स्थान पर इतने सारे विविध गीतों का संकलन होने से आधुनिक पीढ़ी इनसे अवश्य लाभान्वित होगी। हिमांशु पब्लिकेशन से प्रकाशित 297 पृष्ठ की यह पुस्तक 395 रूपये की है।

पपेट मपेट का भ्रम देता कठपुतली कला पर 'कला वसुधा' का संग्रहणीय अंक

प्रदर्शनधर्मी कलाओं में कठपुतली कला सबसे भिन्न कौतूहलवर्धक माध्यम है जिसमें कठपुतली मुख्य पात्र होती हुई भी असल की नकल और नकल की असल होने का भ्रम देती दर्शकों में मुखरित होती है जबकि उसका चलायमान चितेरा कलाकार अदृश्य रहता करिश्माई कौतुक दिये रहता है। कठपुतली प्रसंग नाम से लखनऊ की कला वसुधा ने अप्रेल-जून 2021 का पूरा अंक ही कठपुतली कला पर प्रकाशित कर महनीय कार्य किया है जिसके लिए डॉ. उषा बनर्जी और शाखा बंद्योपाध्याय सचमुच ही धन्यवाद के कलाकर्मी हैं।

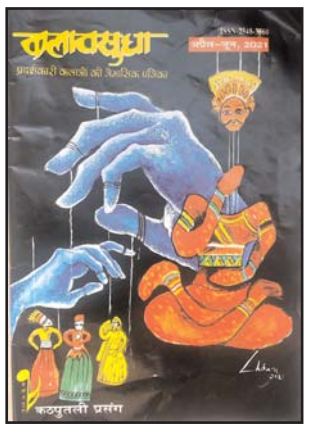

उषाजी ने तो अपने सम्पादकीय को भी कठपुतली संवाद ही बनाते 'कहना-सुनना' शीर्षक से संवारा है और कठपुतली बोली में ही उसे अवतरित करते शुभारम्भ दिया है। इससे लगता है जैसे पुतली के सुशोभित मंच पर एक-से-एक पुतली उतरती अपनी कहनी कह रही है-

'हमारे सहृदय भी सुधी पाठकगण स्निग्ध प्रणति / नमस्कार में संघर्ष है जीवन का / कभी सत्य से असत्य की तनातनी का / कभी अन्याय से न्याय की ठगी / कभी दुःखों से अनमनी / काश! सब हो जायें सहृदय / हर सुबह हो गुनगुनी'.....

लगता है, पूरा कला वसुधा अंक ही एक पुतली मंच है और दर्शक-लेखक के समक्ष उसका हर लेखन पुतली में उतरता, इठलाता, ओळखाण देता प्रत्यक्ष हो रहा है।

इस अंक में कठपुतली कला पर प्रथम लेख ही मेरा देकर सचमुच ही उन्होंने मुझे बड़ा मान दिया है। मुझे यह खुशी है कि जो कार्य सन् 1958 से हमने प्रारम्भ कर विश्व कीर्तिमान तक पहुंचाया उसको लेकर भारत के विभिन्न अंचलों में अनेक कठपुतलीकर्मी प्रयोगरत होकर बड़ा उम्दा काम कर रहे हैं किन्तु अनेक लोग तो अभी भी ऐसे हैं जो कठपुतली को मात्र कठपुतली मानकर केवल मनोरंजन का साधन स्वीकार किये बैठे हैं।

भारतीय लोककला मण्डल के माध्यम से उदयपुर में हमने सन् 1959 में ही प्रथमबार अखिल भारतीय कठपुतली समारोह तथा फिर 1976 में राजस्थानव्यापी बाल कठपुतली समारोह का सूत्रपात किया और उसका परिणाम यह रहा कि राज्य के शिक्षा विभाग ने इसे एक क्राफ्ट विषय में मान्यता दी और प्रशिक्षणार्थ हमारे यहां अनेक अध्यापक भेजे जिन्होंने अनेक गांवों में, अनेक व्यावसायिक कलाकारों, विदेशी कलाकारों को प्रशिक्षित किया। गूंगे, बहरे, विकलांग तथा समस्याग्रस्त बच्चों को लेकर भी हमने देखा कि कठपुतलियां उनमें कितनी कारगर सिद्ध होती है।

हमारे यहां प्रशिक्षण प्राप्त स्वीटजरलैण्ड के पेरेट माइकल दम्पति, स्वीडन के माइकल मश्क, कैलिफोर्निया के एम. इ. केसेडो तथा न्यूजीलैण्ड के एडनाजिम बर्टन ने छड़ दस्ताना तथा सूत्र शैली में दक्ष होकर अपने यहां प्रदर्शन शुरू किये। इन प्रयोगों में एक प्रयोग तो हमारे ही मंच पर ऐसा हुआ जिसमें कठपुतली और कलाकार दोनों का एक साथ पूरे प्रस्तुतिकरण के दौरान कठपुतली का ही भ्रम बना रहा। इस दल ने इसका नाम पपेट की बजाय मपेट दिया जिसमें मानव और पुतली दोनों की सहभागिता रहा।

कला वसुधा के इस अंक में कुल 47 आलेख हैं। सभी के लेखक अनुभवी कठपुतलीविज्ञ, प्रस्तुतकर्ता तथा प्रयोगधर्मी हैं। वे अपने साथ कठपुतलीकला के किसी-न-किसी महत्त्वपूर्ण प्रसंग में अपनी भागीदारी सुनिश्चित किये हैं तथापि रमा यादव ने 'तरह-तरह की कठपुतलियां और उनका संसार' में अपनी अनुभवी पैनी नजर से कठपुतली की कोख को दृष्टिगत करते राजस्थान के पुतली भाटों से रू-ब-रू हो उनके कला कौतुक के बहाने सार्वजनिक सामाजिक जीवन सेतु को भी सूत्रबद्ध किया है।

अभिषेक कुमार ने कठपुतली को लोकनाट्य परम्परा से जोड़ते उसकी अभिव्यंजना शक्ति को रूपायित किया है। राजस्थान के कठपुतली कलाकार सागर भाट ने सबसे पहले दिल्ली में अपने प्रदर्शनों से नाम कमाया। अभिषेक कुमार ने ठीक ही लिखा- 'हिन्दी साहित्यकार जगदीशचन्द्र माथुर ने सागर भाट एवं उसकी पत्नी के लिए अपना नाम नहीं लिखकर 'कुंवरसिंह की टेक' और 'गगन सवारी' नाटक लिखे जिनके अनेक प्रदर्शन दिये और अनेक लोगों को कंठस्थ भी हुए।'

(पृष्ठ 67)

यहां स्मरणीय है कि सागर 'भट्‌ट' नहीं होकर 'भाट' था। भारतीय लोककला मण्डल में आयोजित गोष्ठियों में मेरा माथुर साहब से मिलना हुआ। वे तब ऑल इण्डिया रेडियो के डाइरेक्टर जनरल थे। उन्होंने कम-से-कम भी एक हजार बार आकाशवाणी केन्द्र से गगन सवारी का प्रसारण किया पर कभी लेखक का नाम उजागर नहीं किया। माथुर साहब ने ही गणतंत्र दिवस पर पं. जवाहरलाल नेहरू के कहने से 1953 में लोकनृत्य समारोह शुरू किया जो आज भी जारी है।

ललितकुमार सिंह ने बताया कि दो वर्ष पूर्व ही उन्होंने उदयपुर में मुझसे भेंट की थी। वे कठपुतली पर पीएच.डी. के लिए शोध कर रहे हैं। एक लम्बी बातचीत के दौरान मैंने उन्हें बताया कि कलामण्डल में रहते जिस तोलाराम ने रूमानिया में कठपुतली प्रदर्शन का विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त किया, उनसे भी वे भेंट करें फलतः वे तोलाराम से भी मिले। 'जनभाषा में बात करती है कठपुतली' आलेख में उन्होंने तोलाराम के लड़के गोपाल से जो साक्षात्कार लिया उसका हवाला दिया है।

इसी कड़ी में सुशीलकुमार सिंह के जीवनानुभवपरक संस्करण तथा डॉ. सुभाषचन्द्रसिंह कुशवाह का लेख 'मनोरंजन का प्राचीन साधन : कठपुतलियां' उल्लेखनीय है। पल्लवी पटेल ने महिपत कवि की परम्परा लेख में अपने पिता की विरासत को ढोने का दायित्व संभालते अच्छा शकुन दिया है। मैंने महिपत कवि से उदयपुर में भेंट की थी। उनके सम्बन्ध में पूछने पर पल्लवी ने बड़े उत्साह और उत्सुकता से सारी बातें कही। महिपत कवि उम्र के पड़ाव में 90 से ऊपर हैं सो मेरी बात पल्लवी से ही होती रही। कुल मिलाकर यह अंक अच्छा, संग्रहणीय तथा स्मरणीय बन पड़ा है।

- म. भा.

स्मृतियों के शिखर (131) : डॉ. महेन्द्र भानावत

भारतीय लोकनृत्यों की वैश्विक छवियां

राजस्थान कई दृष्टियों से देश के अन्य प्रांतों से अनुपम और अजूबा है। प्रसंग चाहे भूगोल या इतिहास का हो अथवा शक्ति और भक्ति का या फिर कला तथा संस्कृति का, राजस्थान का कोई सानी नहीं। लोकरंगों की जितनी विविधावलियां यहां देखने को मिलेंगी उतनी अन्य किसी प्रांत में शायद ही मिलें। लोकनृत्यों की भी यही स्थिति है।

भारत में प्रचलित लोकनृत्यों का ही अध्ययन करें तो लगेगा कि यहां के लोकनृत्यों की जैसी अनुपम छवियां हैं वे अपने में बेमेल हैं। बहुत से नृत्य तो बड़े ही अजूबे हैं जो अन्यों के लिए मुश्किल हैं। ऐसे नृत्य भी कम नहीं हैं जो धार्मिक अनुष्ठानों तथा अध्यात्म से सम्बन्धित होकर देवाराधना तथा तंत्रसिद्धि के सकारात्मक पक्ष के उज्ज्वल आराधक हैं। उनकी शक्ति की तो परिकल्पना ही मुश्किल है। लोक में प्रचलित इस विपुल और विविध पक्षीय अकूत संपदा का अध्ययन एवं अन्वेषण करने से पूर्व हमें लोक और उसकी श्रुति को ठीक से समझना होगा। यह श्रुति चिर पुरातन है तो चिर नूतन भी, इसलिए यह शाश्वत भी है। इस बारीकी एवं गहराई को भी हमें समझना होगा कि हम भारतीय मनीषा को भारतीयता की आंख-पांख से देखें। पराई विदेशी दृष्टि से देखने की हमारी मानसिकता ने अर्थ का अनर्थ ही अधिक किया है। इससे हमारी शब्द-शक्ति का बड़ा क्षरण हुआ है।

यह लोक वाचिक-परम्परा का महत्त्वपूर्ण सेतु है। वाचिक-परम्परा श्रव्य-परम्परा है। इसमें सब कुछ कहन, कथन होता है। यह लोक उस पूरे लोक का समूह है जो इन्द्रिय गोचर है। जो कुछ देखा, सुना, चखा, सूंघा और छुआ जा सकता है वह सब इस लोक में सन्निहित है लेकिन यही नहीं, लोक तो और भी है- पराशक्ति, आलौकिक, रहस्यमय, अबूझ और अज्ञेय का। यह लोक भी इसी लोक का हिस्सा है। मनुष्य इसके केन्द्र में है। मध्य में है। माध्यम है क्योंकि वही विशिष्ट, महत्त्वपूर्ण और चेतनशील प्राणी है जो पांचों इन्द्रियों का धारक भी है।

जीवन-व्यवहार में ही नहीं, अपितु साहित्य, संस्कृति, कला, स्थापत्य तथा प्रकृति-कृति में भी राजस्थान के अनेकानेक रंग रूपायित हैं। इन रंगों की अनेक चासनियां विविध कथा-किस्सों, बात-बोलों, कहावत-मुहावरों, खेल-तमाशों तथा शिल्पगत संस्कारों द्वारा इन्द्रधनुषी लय-जयकारों में देखने को मिलती हैं। सर्वाधिक सांस्कृतिक रंगों की मोहक मधुरिम छटाओं का सौंदर्य देखना हो तो अनगिनत कथाएं अपने श्रवण, चक्षुण एवं पठन के पायदान पर मुलकाती मिलती हैं।

ऐसे अनेक गीतों के माध्यम से गायकों, गाथाओं के माध्यम से गावेरियो तथा कथाओं के माध्यम से कथक्कड़ों ने उन चरित्रों को जीवित रखा जिन्होंने समाज तथा मानव हित के लिए अपना उत्सर्ग कर दिया। उनमें से कई इतिहास के पन्नों पर चढ़े ख्यात बने हुए हैं। कई कण्ठासीन बने युगयुगीन जीवंतता के बोधक हैं तो कई कहावतों तथा मुहावरों के माध्यम से मानवीय मूल्यों तथा नैतिकता के मापदण्डों के प्रतीक बने हुए हैं। अतीत के ये चरित्र हमारी जीवनधर्मिता के साथ आज भी उतने ही प्रासंगिक बनकर विकसित कहे जाने वाले समाज के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बने हुए हैं।

राजस्थान में ऐसे वीरवरों को याद रखते हुए उन्हें मान-सम्मान सूचक रंग देने की परम्परा है। परम्परा की इस कड़ी में राम-लक्ष्मण से लेकर वर्तमान काल तक के परमवीर पीरनसिंह शेखावत जैसे वीरों का श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। यथा-

रंग रामा, रंग लिछमणा, रंग दशरथ रै कंवरांह।
लंका लूटी सोवणी, आलीजा भंवराह।।
टीथवाल री घाटियां, विकट पहाड़ां बंक।
शेखे किये अद्‌भुत सफर, रंग पीरुसी रंग।।

आजादी के बाद प्रथम प्रधामंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने पूरे देश का भ्रमण कर उसके विविध अंचलों में बस रहे लोगों की कला-परम्पराओं, मन-बहलाव की बहुरंगी चेतनाओं तथा जीवनयापन से जुड़े हर्षोल्लासजनित सांस्कृतिक संस्कारों को निहार कर पाया कि यहां के लोकनृत्य सर्वाधिक छवि लिये हैं जो समग्र रूप से भारतीयता की गहरी तथा ठेठ जीवन के मूल स्त्रोतों के रक्षक बने हुए हैं।

इस दृष्टि से राजस्थान उन्हें सर्वाधिक रंगीन प्रदेश लगा और प्रेरणा हुई भारतीय की असल आत्मा का यदि एकसाथ दिग्दर्शन करना हो तो लोकनृत्यों का एक ऐसा समारोह आयोजित किया जाना चाहिये जिसमें विविध प्रांतों के लोकनृत्यों की झांकियों द्वारा भारत के जनजीवन की मूल आत्मा के स्वरूप का दरसाव हो और उसके माध्यम से देश की अमूल्य कलानिधि का संरक्षण हो जिससे लोगों को यह लगे कि यह समृद्ध कला हमारी विरासत बनी रहे। कहीं ऐसा न हो कि हमारे देखते-देखते हमारे हाथों से यह विलुप्त हो जाय। यही सोचकर उन्होंने गणराज्य दिवस पर सर्वप्रथम 1953 में राजधानी दिल्ली में लोकनृत्य समारोह का शुभारंभ किया।

वाचिक-परम्परा का उल्लेखनीय पक्ष सम्प्रेषण है। यह सम्प्रेषण मात्र भाषा का ही नहीं, हाव-भावों का, इशारों का, चेष्टाओं का, नकल का, व्यक्त का, अव्यक्त का, मौन का, हंसी का, रूदन का, चीख का, चिल्लाहट का, गर्जन का, क्रन्दन का, विषाद का, संकेत का, समझ और साहचर्य आदि का भी हो सकता है। भाषा के पूर्व का माध्यम तो संकेत ही था जो मनुष्य के साथ आदिमकाल से ही चला आ रहा है। नृत्य इसका प्रबल और सशक्त माध्यम कहा जा सकता है।

राजा-महाराजाओं के संरक्षण और जजमानी प्रथा के कारण यहां बहुत से नृत्य फले-फूले और अपनी पहचान बनाये रह सके। धर्म के विभिन्न तानोंबानों और सम्प्रदायों की मान्यताओं ने भी यहां के लोकनृत्यों पर अपना जबर्दस्त प्रभाव छोड़ा। मेलोंठेलों, उत्सवों और यात्रा-संघों ने भी इसमें नई स्फूर्ति और जोश जगाया। जीविकोपार्जन के साधन बनने के कारण नृत्यों की भावभूमि ने तदनुरूप रंग बनाये रखा।

आजादी के पहले और उसके बाद की स्थितियों में बड़ा अंतर आया है। इसके फलस्वरूप बहुत से लोकनृत्यों के रूप-स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। कुछ की पहचान धूमिल हुई है तो कुछ अनजाने रहे अब अधिक जानने लगे हैं। जो अपने ही अंचल तक सीमित थे उनको अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज मिला है। कुछ जिस नाम से पहले चर्चित थे, अब उससे भिन्न नाम लिये हैं। ऐसा भी हुआ है जब जो नृत्य जिस जाति में प्रचलित रहा उसी जाति के नाम से उसकी प्रसिद्धि बन गई। ऐसे नृत्य भी हैं जो नृत्य की किसी खास सीमा में नहीं आने पर भी जनता जनार्दन में नृत्य के रूप में उनकी प्रतिष्ठा है।

संगीत के घराने की तरह लोकनृत्यों के घराने जैसी परम्परा देखने को नहीं मिलती। अलबत्ता पेशेवर कलाकार और आम आदमी के लोकनृत्यों में अवश्य भिन्नता देखने को मिलती है। पेशेवर कलाकारों के लोकनृत्य अधिक सधे हुए और दर्शकों की मनस्थिति के अनुरूप परिस्थितिजन्य अभिव्यक्ति लिये होते हैं। देहाती और शहरी लोकनृत्यों में भी भिन्नता के दर्शन होते हैं। देहाती लोकनृत्य अपनी परम्परा की पैठ लिये अति सरल और सहजभावी होते हैं जबकि शहरी लोकनृत्यों में रूपान्तरित भावभूमि और वातावरणीय तड़क-भड़क की प्रधानता देखने को मिलती है।

संक्षेप में प्रकृति एवं स्वरूप की दृष्टि से लोकनृत्यों का विभाजन निम्नानुसार किया जा सकता है-

(1) वृत्ताकार नृत्य
(2) कतारबद्ध नृत्य
(3) जुलूस नृत्य

लोक की गहन अनुभूति और समझ रखने वाले शास्त्रकारों और सूत्रविज्ञों ने इसका खुलासा करते हुए जैन आगम सूत्र स्थानांग के चतुर्थ स्थान में चार प्रकार के नृत्यों का उल्लेख किया है। ये नृत्य लोकजीवन में प्रचलित नृत्य-रूप ही हैं। यथा-

(1) ठहर-ठहरकर नाचे जाने वाले नृत्य
(2) संगीत के साथ नाचे जाने वाले नृत्य
(3) संकेतों द्वारा भाव प्रकट करने वाले नृत्य
(4) झुककर अथवा लेटकर किये जाने वाले नृत्य

शास्त्रों में पंचतत्व- पृथ्वी, आकाश, वायु, जल और अग्नि का सम्बन्ध भी नृत्यों से जोड़ा गया है। राजस्थान के घूमर नृत्य में पृथ्वी विभाव की गतियों का उल्लेख करते हुए डॉ. जयचन्द्र शर्मा ने ग्यारह कलामान गिनाये हैं। यथा-

(1) एक ही स्थान पर घूमने को भ्रमर गति
(2) आगे-पीछे, दांये-बांये नृत्य का विस्तार करने को विस्तारिणी
(3) पूरे रंगमंच का चक्कर लगाने को भ्रमणी
(4) शरीर को पूरी तरह सीधा रख नृत्य करने को शिखरणी
(5) अंग-प्रत्यंगों के संचालन की स्वाभाविक क्रिया को शान्ता
(6) गर्दन एवं नेत्रों का लयबद्ध संचालन सलिला
(7) कमर की लचक के साथ नाचने को सुजला
(8) प्रत्येक भाव को घुमाव के साथ प्रस्तुत करने को रत्ना
(9) तीव्र गति से घूमने और द्रुत गति से अंग-प्रत्यंगों का संचालन करने को नाशिनी
(10) घूंघट के भावों को प्रस्तुत करने को गृहिणी
(11) घाघरे के दोनों कोनों को पकड़ नृत्य करने की मुद्रा को पालनी अथवा मयूरी कहा गया है।

नृत्य जब थिरकता है तो संगीत की मनचली चलती है। उस हाव और भाव में ही संगीत की सहचरी सरहराती है। फसलें लहलहाती हैं तो हवा सर्र फर्र संगीत का राग देती हैं। आकाश गरजता है तो बीजली के बोल अलापते हैं। मयूर नाचता है तो मेहा झरमर-झरमर टप्पे देता है।

लोकनृत्य लोकजीवन को सर्वाधिक रंगीन और रसपूर्ण बनाते हैं। इनके साथ गीत से भी अधिक संगीत का निनाद महत्वपूर्ण है जिसके बूते कोई नृत्य गति, लय, थिरकन एवं अंग पकड़ता है। संगीत और नृत्य का सम्बन्ध हल-बैल की तरह है किन्तु जब ये चरम अवस्था लिये होते हैं तब इनका स्पर्धाभाव एक भिन्न लोक की सृष्टि करता पाया जाता है। इनकी शक्ति पानी, अग्नि तथा वायु की ताकत से भी सवाई कही गई है। जब ये असीम हो जाते हैं तब नृत्य-संगीत ही इन्हें वशीभूत कर सकता है। इसलिए शास्त्र उतना महिमावान नहीं है जितना लोक। लोक का आलोक ही किसी शास्त्र को दीप्त करता है। लोक माटी का वह दीया है जो तेल-बाती से प्रकाशित होता है जबकि शास्त्र बल्ब और बिजली के जोड़ से रोशनी करता है।

लगभग छठी सदी में लिखित 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' के 'नृत्त सूत्र' में नृत्य के सम्पूर्ण संहिता-ज्ञान को लोकहित के उद्देश्य से परिकल्पित किया गया है। प्रारम्भ से ही लोक में नर्तन की परम्परा के जिन उद्देश्यों को, लक्ष्यों को देखा गया था वे हैं-

(1) देवताओं की आराधना करना व इच्छित फल प्राप्ति। (2) नृत्य से मोक्ष की प्राप्ति। (3) नृत्य से धन्य, यश, आयुष्य व स्वर्ग की प्राप्ति। (4) देवताओं का विलास करना। (5) आर्तजनों का दुःख विनाश करना। (6) मूढ़जनों को उपदेश देना। (7) स्त्रियों के सौभाग्य का वर्द्धन। (8) शांति-कर्म, पुष्टि-कर्म व काम्य-कर्म की सिद्धि।

लोकनृत्यों पर अध्ययन करने की समझ के आज हमारे पास कई पैमाने, आधार, औजार एवं पारिस्थितिकी प्रबन्ध हैं। ऐसे अध्ययन और अन्वेषण आवश्यक हो गये हैं किन्तु कई बार वे उनके मूल को नहीं पकड़ पाते। मेरे अध्ययन की दृष्टि उनके मूल सत्व एवं सरोकार पर अधिक केन्द्रित रही है। यह आवश्यक भी है कारण कि कई बार आंचलिक संस्कृति को समझने के लिये वहाँ की शब्दावली का बोध नहीं होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

उदाहरण के लिये रेगिस्तान के लंगा गायक जब अपने स्वर माधुर्य में लीन हो ठुमक पड़ते हैं तब विदेश में उनका ठुमकना नृत्य नाम धारण किये 'लंगा नृत्य' बन जाता है लेकिन लंगा - अर्थ से अनभिज्ञ होने के कारण उसका अर्थ लहँगा (घाघरा, कटि के नीचे का पहनावा विशेष) होता हुआ उसे 'पेटीकोट डांस' बना दिया जाता है।

इसी प्रकार बालिकाओं द्वारा श्राद्धपक्ष में दीवाल पर गोबर-फूलों से सज्जित सांझी के गीत की एक पंक्ति है - 'अतल-पतल की तोरमी।' तोरमी का अर्थ तुरई से है पर अतल-पतल को जानकारी के अभाव में निरर्थक शब्दावली माना जाता है जैसे बच्चों के गीतों में प्रयुक्त कई शब्द होते हैं पर गहराई से चिंतन करने पर अतल-पतल हमारे पल्ले पड़ सकता है।

हमारे यहाँ सात तल जिन्हें लोक भी कहते हैं, प्रसिद्ध हैं। उनमें पहला अतल तथा आखिरी पतल है - अतल, सुतल, वितल, तलातल, महातल, रसातल एवं पाताल। गीत-पंक्ति में अतल की तुक में पाताल भी पतल हो गया है। ऐसा होने से वह अधिक लयात्मक, गत्यात्मक तथा सौंदर्यनिष्ठ भी बन गया है। बालिकाओं के सरल मन एवं सहज स्वर-माधुर्य में अतल की संगत में शोभित होने के लिए पाताल को पतल ही होना। था।

लोकनृत्य ही क्यों ; लोक का कोई अध्ययन कभी पूर्ण नहीं होता। वह जितना-जितना पूर्ण हुआ लगता है उतना-उतना अपूर्ण हुआ जाता है। हमारे खोज के पग जितनी डंडियाँ नापेंगे उतनी ही अधिक पगतलियाँ हमारा मार्ग प्रशस्त करेंगी।

शरीर के विभिन्न अंगों एवं अवयवों द्वारा ताल एवं लयबद्ध अर्थपूर्ण गति-अभिव्यक्ति को नृत्य कहते हैं। केवल हाथ-पाँव हिलाना, भौंडी शक्ल बनाना अथवा उछलकूद करना नृत्य नहीं होता। इसके लिए जरूरी है कि विशिष्ट भाव, रस एवं व्यंजना की प्रतीती दर्शकों को हो। साथ ही नर्तक अपने मनोभावों का उल्लास के साथ प्रगटीकरण कर सके। इस दृष्टि से यदि देखा जाय तो हर व्यक्ति अपने भीतर एक नृत्यकार का मन लिये होता है।

सामान्यतः व्यक्ति के दो स्तर होते हैं। एक सहज एवं सरल व्यक्ति तथा दूसरा असहज एवं विशिष्ट व्यक्ति। सहज एवं सरल व्यक्ति का समाज ही लोकसमाज है। यह समाज लोकानुरंजन से भरपूर होता है। अपनी आवश्यकताओं एवं उम्मीदों में यह संतोषी होता है।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 नवम्बर 2021

सम्पादकीय

दीवाली के स्वागत में अगजग

त्यौहारों में दूसरा कोई त्यौहार ऐसा नहीं है जब सबओर देव तथा मनुज जगत में उसके स्वागतार्थ विशेष उत्साह, हलचल, साजसज्जा देखने को मिलती हो। गरीब से गरीब और सम्पन्न से सम्पन्न लोग भी अपनी-अपनी हैसियत तथा मनोच्छा के अनुसार दीवाली को पाहुनी करने में पलकपांवड़े बिछा देते हैं।

जैसे आसमान तारों से आच्छादित हो जाता है वैसे ही इस दिन सर्वत्र प्रकाश कर दिया जाता है। छोटे-छोटे दीपक से लेकर बड़े-बड़े प्रकाश स्तंभ दूर-दूर तक प्रकाश ही प्रकाश विकीर्ण किये रहते हैं। इससे पूर्व प्रत्येक स्थल सम्पूर्णत: साफ सुथराई लिये तैयार कर लिया जाता है। वर्षाजनित जो भी दंद, फंद, संद, फफूंद, कूड़ा, कचरा तथा कीड़ा-पीड़ाजनित जीवाणु पैदा हो जाते हैं उनका समग्र सफाया कर हर वस्तु, कोना, गृह, आंगन स्वच्छता के शिखर तक पहुंचाया जाता है।

इन्हीं दिनों धनदेवी लक्ष्मी के आव्हान हेतु विशेष रूप से गृहदेवियां तैयारी करती हैं। गृह-आंगन से लेकर पूजास्थल तक को विशेष चौकों, पगलियों, फूल-पत्तियों के मांडनों से सजाती हैं।

दीवाली का दूसरा दिन पालतू पशुओं की विशेष सेवा-पूजा तथा देखभाल के लिए रहता है। इस दिन पशुओं को स्नानादि करा विविधरूपा सिणगारा जाता है। विविध रंगों से उनके सींग रंगे जाते हैं। शरीर पर मेंहदी रचाई जाती है। उन्हें अच्छा खिलाया, पिलाया, सिणगारा जाता है।

गांवों में तो समूह रूप में उनकी पूजादि के आयोजन किये जाते हैं। उनकी दौड़ की जाकर पुरस्कृत किया जाता है और जिस रंग का जानवर दौड़ में बाजी मारता है उसके अनुसार आने वाले वर्ष के शुभाशुभ शकुन निकाले जाते हैं।

जहां दीवालीजनित मेले लगते हैं वहां कई तरह के विविध रूपा समूह नृत्य तथा मेलार्थियों की भीड़ देखी जाती है। उनमें से बहुतेरे देवलोक के व्यक्ति होते हैं जो मृत्युलोक में आकर अपनी भागीदारी निभाते हैं।

खेंकरे यानी दीवाली के दूसरे दिन प्रात: घर की देहरी पर गोबर के गोरधनजी पूजे जाते हैं। ये गोरधन कृषिजगत के प्रतीक होते हैं। धरती पर गोबर के मोटे गोरधन बनाये जाकर मकई के दानों से शृंगारे जाते हैं। नव फसल गन्ने का भोग रूप में इन्हें चढ़ावा दिया जाता है। पूजा की विधि के लिए घी का दीपक जलाया जाकर लपसी चावल की धूप दी जाती है। गोरधनजी के गीतों में पूरी सांस्कृतिक हलचल लिये जीवन-संस्कृति का बीजारोपण ही मिलता है।

यह गोवर्धन ही सचमुच में गोबर-धन का प्रतीक परिचायक है। हमारे राष्ट्र का झण्डा है, पक्षी है, पशु है, संविधान है पर धन कौनसा है सो गोवर्धन के बहाने गोबर ही धन है। यह दीवाली बाल-बच्चे, प्रौढ़ तथा बुजुर्ग सभी अपने-अपने रंगढंग से मनाते हैं। आइये, हम सब भी इसके स्वागत में जुट जायें।

करमफूटे ने चंदन को कोयला किया

पुराने दफ्तर की छत फोड़ता ऊपर बरगद और नीचे जरगद

एक राजा ने करुणा करके किसी गरीब को चन्दन के पेड़ों का उद्यान भेंट किया। गरीब प्रसन्नता से खिल उठा। चार महीने के बाद राजा उसी रास्ते से गुजर रहा था पर चन्दन का उद्यान नजर नहीं आया। उद्यान के स्थान पर कोयलों के ढेर लगे हुए थे।

वह रथ से उतर कर अन्दर पहुंचा तो सामने से एक व्यक्ति दौड़ा-दौड़ा आया। प्रणाम करता हुआ उन्हें सादर आसन प्रदान किया। राजा ने पूछा, इस जगह पर पहले चन्दन के वृक्षों से लहलहाता उद्यान था, वह कहां गया? वह व्यक्ति बोला, राजन्! आपने कृपा करके मुझे जो बाग दिया था, उससे मैं तो धन्य हो गया। मैंने चन्दन के सारे पेड़ों को कोयलों में बदलकर उसका व्यापार शुरू कर दिया। आज मुझे दुकान-मकान, यश-मान आदि की किसी भी अपेक्षा से कमी नहीं है, यह सब आपकी ही कृपा का परिणाम है। राजा ने कहा, चन्दन स्वयं बहुत मूल्यवान होता है। ये जो कुछ लकड़ियां बची हैं, उनमें से एक को बेचकर आ। आज्ञा का पालन हुआ। एक ही लकड़ी बेचकर उसने जो दाम पाया था, वह अद्‌भुत था। अपनी गलती के कारण वह आदमी रोने लगा क्योंकि उसने मूर्खता से मूल्यवान चन्दन का उद्यान जलाकर जीवन की सम्पदा को समाप्त कर दिया था।

-मुनि मनितप्रभसागर

कोई अपने को करेक्ट से पूर्व कनेक्ट करे तो ही करेक्ट हो पायेगा : आरिफ शेख
जीवन में सकारात्मक शब्दों का अभ्यास जरूरी : प्रो. सारंगदेवोत
जिनके भाव अच्छे, उनके कार्य भी अच्छे : नंदिता भट्ट

उदयपुर (वि.)। तामिर सोसायटी का 30वां अवार्ड समारोह 24 अक्टूबर को आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि आरिफ शेख ने कहा कि किसी भी व्यक्ति को करेक्ट करने से पहले उससे अपनेआप को कनेक्ट करना चाहिये तभी हम उसे कनेक्ट कर पायेंगे।

राजस्थान विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सकारात्मक शब्दों के उपयोग की महत्ती आवश्यकता है। महाराणा प्रताप हवाई अड्डे की निदेशक नंदिता भट्ट ने कहा कि जिनके भाव अच्छे होते हैं, उनके हाथों से कार्य भी अच्छे होते चले जाते हैं। अध्यक्ष शेख शब्बीर मुस्तफा ने कहा कि व्यक्ति की सफलता अच्छे कार्य से समाज में अपनी पहचान बनाने में है।

तामिर सोसायटी के चेयरमैन डॉ. इकबाल सागर ने सोसायटी की 30 वर्षों की यात्रा की जानकारी दी। समारोह में मुस्तफा शेख, सैय्यद अख्तर अली बुखारी, शमशुनिसा शेख, मोहम्मद जफर जिलानी, तसलीम आरा, हाजी सलीम अगवानी, अकील हुसैन मंसूरी, जाकिर हुसैन घाटीवाले, सैय्यद हुसैन व सैय्यद अकील हुसैन को ख्वाजा गरीब नवाज अवार्ड, अब्दुल लतीफ को मिर्जा गालिब अवार्ड, मिस गुलशन पिजोरा, मिस शीना वाहिद खान, आदित्य काले को डॉ. जाकिर हुसैन अवार्ड, विनय भाणावत, सरदार रविन्द्रपालसिंह कप्पू को कौमी एकता अवार्ड, दिनेश गोठवाल, डॉ. महेन्द्र भानावत, राजेन्द्र बया, वसीम खान, डॉ. रोशन, शायर मुश्ताक चंचल, मोहम्मद सिद्दीक नूरी को तामिर स्पेशियल अवार्ड, सैय्यद अमजद अली को खादिम ए हुज्जाज अवार्ड से सम्मानित किया गया।

तामिर स्पेशियल अवार्ड से सम्मानित होते डॉ. महेन्द्र भानावत

ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी : सुशासन की तरफ एक सुंदर पहल

- प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत -

सुशासन सरकार की वह व्यवस्था है जहां भ्रष्टाचार न हो। जनता का सरकारी काम बिना रोक-टोक होता रहे। सरकार द्वारा प्रदत सेवाएं जनता के पास निर्बाध पहुंच जाएं और जनता की निजता का हनन ना हो। यदि सरकार की नियत साफ हो तो ऐसा सुशासन ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी की मदद से संभव है। ब्लॉकचैन टेक्नोलॉजी का सर्वप्रथम प्रयोग बिटकॉइन में किया गया।

वर्तमान सरकार इस दिशा में कार्य कर रही है। यह संतोष का विषय है। नेशनल डेमोक्रेटिक एलाइंस की सरकार ने एक बयान जारी किया था कि हम क्रिप्टोकरंसी के पक्ष में तो नहीं हैं किंतु ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देना चाहते हैं। मैं सरकार के इस सोच को सुशासन की तरफ एक अच्छी पहल के रूप में देखता हूं। आज भी यदि किसी को जाली आधार कार्ड, पैन कार्ड , वोटर कार्ड चाहिए तो आसानी से ऑनलाइन मिल रहे हैं।

हमारी धारणा तो यह है कि ऑनलाइन कार्यों में भ्रष्टाचार की संभावना नहीं होती है जबकि भ्रष्टाचार हो रहा है। रोड़ ट्रांसपोर्ट एवं हाईवे मंत्री श्री नितिन गडकरी ने लोकसभा में कहा था कि भारत में 30 प्रतिशत ड्राइविंग लाइसेंस नकली हैं। बैंक के कर्मचारी उद्योगपति से मिलकर आसानी से गबन कर रहे हैं। केरल विश्वविद्यालय में जाली प्रमाणपत्रों को जारी करने के एक रैकेट का पता चला है। नीरव मोदी, विजय माल्या जैसे बड़े उद्योगपति बहुत आसानी से बैंक कर्ज को डकार जाते हैं और आह तक नहीं भरते।

इस तरह की घटनाएं राजनीतिक या अन्य दबाव के कारण पुराने डाटा में हेराफेरी और नियमों की अनदेखी करने के कारण ही होती हैं। यदि सिस्टम इस तरह से बन जाए कि एकबार जो नियम बन गया उसमें परिवर्तन की गुंजाइश ना हो तो ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सकता है। ऐसा संभव है यदि सरकार सरकारी सिस्टम को स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट के माध्यम से ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी डाटा प्लेटफार्म पर हस्तांतरित करदें। अपने संपूर्ण डेटाबेस ब्लॉकचेन प्लेटफार्म पर डालदें तो उसमें परिवर्तन करना असंभव होता है क्योंकि इसमें एक निश्चित व्यवहारों का एक ब्लॉक बनता है जो अपरिवर्तनीय होता है। ऐसी स्थिति में जेक एवं चेक दोनों प्रभावहीन हो जाएंगे। भ्रष्टाचार पर अंकुश की दिशा में यह एक अच्छी पहल होगी। स्वीडन, दुबई, यूके आदि देशों ने अपने लेंड रेकॉर्ड प्रबंध के लिए ब्लॉकचैन टेक्नोलॉजी को अपना लिया है।

बताया जाता है कि दुबई सरकार को 5.50 बिलियन दिरहम प्रतिवर्ष की बचत हो रही है। ब्राजील ने ई प्रोक्योरमेंट तथा चीन ने टैक्स कलेक्शन का कार्य ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर डाल दिया है। भारत में भी तमिलनाडु एवं कर्नाटक सरकारों ने अपने लैंड रेवेन्यू के डाटा ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर डालना प्रारंभ कर दिया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के वर्ल्ड फूड प्रोग्राम के तहत सीरियन शरणार्थियों को दिए जाने वाली सहायता को ब्लॉकचेन तकनीक के माध्यम से देना प्रारंभ कर दिया। इस प्रोग्राम के तहत पहले शरणार्थियों को फूड कूपन दिए जाते थे जिसके माध्यम से सुपर मार्केट से राशन का सामान खरीदते थे। फिर सुपरमार्केट इन कूपन को यूएनओ को हस्तांतरित कर नकद राशि प्राप्त कर लेते थे। ऐसी स्थिति में वहाँ के स्थानीय नेता एवं असामाजिक तत्व शरणार्थियों को डरा धमकाकर कूपन छिन लेते और सुपरमार्केट से नकद राशि प्राप्त कर लेते थे।

अब कूपन व्यवस्था समाप्त कर सभी लाभकर्ताओं को ब्लॉकचैन तकनीक के माध्यम से उनके आँखों की पुतलियों को सेन्सर कर राशन दिया जाने लगा है। इस कदम से बैंक एवं वित्तीय चार्ज में लगभग 98 प्रतिशत कटौती हो गई। इससे भ्रष्टाचार लगभग समाप्त हो गया है।

सामान्यतया भ्रष्टाचार गैर जिम्मेदार तथा आपराधिक प्रवत्तिवाले पशेवर लोग, जाली हस्ताक्षर, छलपूर्ण क्रियाओं तथा रेकॉर्ड में छेड़खानी के परिणामस्वरूप करते हैं। ब्लॉकचैन टेक्नोलॉजी वह तकनीक है जिसमें मध्यस्थता की भूमिका नहीं होती। रेकॉर्ड में छेड़खानी नहीं हो सकती। ब्लॉकचैन इंटरनेट के माध्यम से दो पक्षकारों के मध्य सीधे व्यवहार करता है ।

सरकार को कम से कम लैंड रिकॉर्ड बिल्डिंग प्लान अप्रूवल, परमिट एवं लाइसेंस, नागरिकों का केवाईसी, कर्मचारियों की विगत सेवाओं का सत्यापन, वेतन भुगतान, जीएसटी एवं आयकर संग्रहण जैसे कार्य को ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी के माध्यम से करना चाहिए जिससे जनता की सरकारी कार्यों में विश्वसनीयता बढ़ेगी।.

अपना देश अपनी संस्कृति

लोकदेवियां : राठासण, आवरी, एलवा तथा स्यावड़ माता

अनेक देवी-देवता के नाम स्थानीय-आंचलिक परिवेश, परिस्थिति तथा घटना-प्रसंग से जुड़े होते हैं। उनके सम्बन्ध की जानकारी कहीं लेखबद्ध नहीं मिलती पर जन-जन के कण्ठों पर मौखिक रूप से व्याप्त होती मिलती है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं। कहीं-कहीं उनके स्मारक के रूप में कोई देवरी, देहरी, चबूतरा, चबूतरी, मंड आदि स्थापित किये मिलते हैं तो कहीं पत्थर पर कोई चीरे मण्डी या कोई सिलपट्टी, शिलालेख भी देखने को मिलता है।

ऐसा भी होता है जब जो स्थान जिस रूप में प्रसिद्ध होता है उससे मिलता-जुलता नाम भी सम्बन्धित देव अथवा देवी का रख दिया जाता है। ऐसे पहाड़ी चोटी पर स्थित, वृक्ष के नीचे, पौधे के पास अथवा झुरमुटे के बीच स्थित देवियों के नामकरण भी तदनुसार कर दिये जाते हैं। किसी देवी के पास कोई खान खनिज होने पर भी वैसा नामकरण हो जाता है। जाति विशेष की देवियां भी हो जाती हैं। कुए बावड़ी बाग बगीची के साथ स्थापित देवियां भी होती हैं। जमीन के एक सिरे पर घड़े पत्थर, अनघड़ पत्थर पर विविध आकार लिए भी देवियों के पहचान-चिन्ह बना दिये जाते हैं।

इन देवियों की पूजा-अनुष्ठान, धूप-दीप के तरीके भी जुदा-जुदा मिलेंगे। किसी के वृक्ष की पाती चढ़ती है। इनमें प्राय: नीम, चन्दन के पत्ते होते हैं। देवी के सिर पर पाती चढ़ाकर कार्यसिद्धि होने, नहीं होने का शकुन लेने के लिए देवी के सम्मुख बैठ जाता है। कुछ ही देर में चढ़ाया पत्ता नीचे गिरता है तो काम सिद्ध होना पक्का मान लिया जाता है। कहीं-कहीं तो मैंने यह भी देखा कि सामने वाला पुरुष या महिला ऐसी स्थिति में किसी कपड़े का पल्ला अपनी गोद में बिछाये रखता है। उसमें ही स्वीकृति सूचक पाती, पत्ता आ गिरता है। फूल सभी के चढ़ाये जाते हैं। कार्यसिद्धि होने पर जब मिष्ठान्न चढ़ाया जाता है तो उसे मीठा प्रसाद कहते हैं। ऐसे ही बलि के रूप में चरका प्रसाद अथवा मीठी-चरकी बोलमा बोली जाती है।

राठासण देवी :

उदयपुर से नाथद्वारा जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित देलवाड़ा कस्बा सामन्तीकाल में अच्छा ठिकाना रहा। यहीं के पंचायती नोहरे में बिराजित मेवाड़ संघ शिरोमणि पूज्य प्रवर श्री अम्बालालजी महाराज और महामंत्री मुनिश्री सौभाग्यमलजी महाराज के दर्शन करने कृष्ण जन्माष्टमी, 18 अगस्त 1976 को मैं पहुंचा। प्रात:काल दोनों सन्तों का सान्निध्य लिए भगवान कृष्ण से सम्बन्धित व्याख्यान श्रवण का लाभ भी लिया।

भोजनोपरान्त यहां राठा हींगजी रो मगरो नाम से प्रसिद्ध पहाड़ी पर अवस्थित लोकदेवी राठासण माता के दर्शन करने गया। मुख्य सड़क से लगी यह मगरी प्रत्येक राहगीर को मन-ही-मन देवी-स्तुति-स्मृति की याद दिये रहती है।

अन्य देवियों से भिन्न इस देवी से जुड़ी कथा सबको ही विशेष रूप से रोमांचित किये रहती है। कहा जाता है कि यहां के कल्याणसिंहजी मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह की नौकरी में थे। नोरत, नवरात्रा का समय नजदीक पड़ने पर उन्होंने महाराणा से छुट्टी चाहने का निवेदन किया। इस पर महाराणा ने मुस्कान देते मजाकिया लहजे में फरमाया 'नोरता में देवी रे जाइने न्यारोई हाथी चढ़ावोगा।' अर्थात् नवरात्रा के दिनों में देवी को जाकर क्या हाथी चढ़ाओगे, हाथी की बलि दोगे ? कल्याणसिंहजी यदि चुप रहते या ढंग का उत्तर नहीं देते तो हो सकता है उन्हें छुट्टी नहीं मिलती सो उन्होंने अपनी त्वरित बुद्धि से जवाब दिया, 'अन्नदाता, बात तो यही सांची है।' इस पर महाराणा ने स्वीकृति दे दी।

नौ दिन का अवकाश लेकर वे देलवाड़ा देवी की अखण्ड सेवा-आराधना-अनुष्ठान में रहे। अपने पास रखी दो नाली बन्दूक तैयार की गई। अष्टमी के दिन मुख्य होम रखा गया। हाथी की बलि के लिए महावत को आदेश दिया गया। महावत ने मन में संकल्प बिठा लिया कि जिस हाथी के साथ मेरा वर्षों से अति आत्मीय एक प्राण दो जीव का सम्बन्ध रहा। उसी के साथ मैं आजीविका से बंधा अपने परिवार का भरण-पोषण करता रहा, अब यदि वह ही नहीं रहेगा तो मेरा जीवित रहना भी धिक्कार है।

मन में दृढ़ निश्चय कर वह अपने हाथी पर सवार हो हाजिर हुआ। हाथी पर बन्दूक का निशाना साधा गया। इस नजारे को देखने पूरे देलवाड़े के लोग ही नहीं, आसपास के गांव-के-गांव टूट पड़े। ठीक समय मुहूर्त के अनुसार कल्याणसिंहजी ने तैयार रखी बन्दूक अपने हाथ में ली और निशाना साधकर जोर का भड़ीका किया। इससे महावत सहित हाथी ऊपर डागरी से गुड़ता-गुड़ता जहां आकर स्थिर हुआ वहां उसकी स्मृति में चबूतरा बनवाकर उसके ऊपर महावत सहित हाथी का प्रस्तर स्तंभ, हरे स्थापित किया गया।

वह मगरा, राठाहींगजी (राठासिंहजी) का मगरा नाम से जाना जाता है। ऊपर राठासण देवी का भव्य मन्दिर है। मन्दिर की सेवा-पूजा का जिम्मा गुसाई परिवार सम्भाले है।

यह घटना महाराणा सज्जनसिंह से पूर्व काल की है। उसके बाद से दरबार में कल्याणसिंहजी की नौकरी माफ होगई। सज्जनसिंहजी के बाद जब फतहसिंहजी ने महाराणा की गद्दी संभाली तब देलवाड़ा राठौड़ सरकार की नौकरी पुन: प्रारम्भ की गई।

आवरी माता :

उदयपुर-डबोक हाई-वे से निम्बाहेड़ा के रास्ते आवरादेवी, आवरी माता की धाम हर समय आने-जाने वाले दु:खियारों से जाग्रत रहती है। इसी कारण यहां यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशालाएं हैं और दुकानें हैं जो हर समय खुली रहती हैं।

यहां लूले पांगे, हवा में आये, लकवा के मरीज देवी की शरण में पहुंचते रहते हैं। दूर-दूर तक देवी की खास मान्यता है। देवी के समक्ष बने आगळ से रोगी को सात बार निकाला जाता है। आसपास का वनस्पतिक स्थान की आबोहवा बड़ी कारगर है। गम्भीर रोगी दो-तीन दिन रखे जाते हैं। बेसुध लेटे रोगी देवी की कृपा से चंगे होकर लौटते हैं।

हवा में आने पर बीमार होने पर तत्काल देवी के नाम का डोरा, जेवड़ी, वेळ गले में बांध दी जाती है जिससे घर पर ही रोगी ठीक होने लगता है। ठीक होने पर बोलमा, मनौती स्वरूप रोगी को देवी के दर्शनार्थ ले जाया जाता है। मनौती स्वरूप देवी को पोशाक, खांड (शक्कर मिश्रित) चने चढ़ाये जाते हैं।

एलवा माता :

डूंगले के पास ऊंची पहाड़ी पर एलवा माता का माना हुआ स्थान है। यहां मुख्यत: तुतलों का इलाज होता है। ठीक होने पर

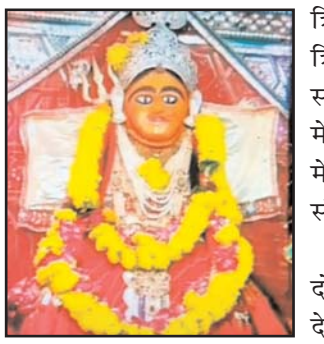

त्रिशूल चढ़ाई जाती है। ऐसी त्रिशूलों का यहां ढेर देखा जा सकता है। यह देवी तीन स्वरूपों में दर्शन देती है। सुबह बाल रूप में, दोपहर प्रौढ़ा रूप में और संध्या बुढ़िया रूप में।

कहते हैं, आवरा, एलवा दोनों बहने हैं। मुझे इन सभी देवियों के दर्शनों का सौभाग्य मिला है। एलवा माता के दर्शन अपने गांव कानोड़ में रहते समय बचपन में मैंने भी किये थे। तब एन सुबह पैदल चलकर देवी दर्शन कर मेले का लुफ्त उठाते देर रात्रि को अपने संगियों के साथ घर लौट आया था।

स्यावड़ माता :

यह एक ऐसी देवी है जो अवसर विशेष के लिए स्थापित की जाती है। इस दृष्टि से इसका कोई स्थायी मन्दिर, मण्डप, स्थल या कि वास नहीं होता। मुख्यत: जब फसल पक जाती है तो उसे खेत के पास ही खलिहान पर एकत्र कर दी जाती है। वहीं से फिर साफ-सुथराई के साथ घर ले जाई जाती है।

खलिहान में प्रारम्भ में ही स्यावड़ माता की थरपना कर फिर फसल छुलाई का काम प्रारम्भ किया जाता है। ऐसी स्थिति में सम्बन्धित फसल की ही घास-फूस, डोडा-चूरा, आवरण पत्ते, बेल जड़वास से काल्पनिक देवी की आकृति बना थापना कर दी जाती है। कुशा घास की चोटी स्यावड़ माता की मुख्य पहचान भी मानी गई है।

अन्नपूर्णा देवी के रूप में भी इसकी मान्यता है। मकई की फसल जब तैयार हो जाती है तो भूट्टे के छिलकों की देवी बना, बाल की जगह भूट्टे के सिर के बाल, जिन्हें माजर मूछ्यां कहते हैं, गूंथ कर चोटी बना दी जाती है। इसका आकार-प्रकार खूबसूरती बनाने वाले पुरुष या कि महिला की कल्पना से जुड़ा रहता है। यही कारण है कि सर्वत्र इसका एक-सा रूप नहीं मिलता है।

चावड़ा देवी :

कुरज के पास गोगाथला में चावड़े बालदही की माता का स्थान है। खेजड़ वृक्ष के नीचे देवी की प्रतिष्ठा की हुई है। पूर्व में यहां 16 बकरों की बलि दी जाती थी। यह चावड़ों की कुलदेवी कही जाती है।

छोटे से गांव में अणुव्रत जैसा समारोह

03 अक्टूबर 2021 को भीलवाड़ा में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में जब लक्ष्मणजी कर्णावट ने मुझे बोधि पुरस्कारोपरान्त बोलने को कहा तो मुझे सहसा 4 से 6 मार्च 1973 को वरदासर जैसे अति छोटे से मेघवाल हरिजनों के गांव में अणुव्रत जैसे महासम्मेलन की याद हो आई। सरदारशहर से मात्र तीन किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित इस गांव को अणव्रती मोहनलालजी जैन ने गोद लेकर अणुव्रत की वैचारिक एवं सैद्धान्तिक विचारधारा के अनुरूप नया मोड़ देने का भगीरथ संकल्प किया था जिसका साक्षी मैं भी बना। उसी अधिवेशन में देवीलालजी सामर को अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का अध्यक्ष बनाया गया था सो हम लोग कुछ कठपुतली कलाकारों को लेकर वहां पहुंचे थे।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी ने अब तक सभी सम्मेलन महानगरों में किये थे। यह पहला अवसर था जब एक छोटे से गांव में और वह भी हरिजन जैसे लोगों की बस्ती में उनके बीच यह सम्मेलन होना सचमुच में बड़ी ऐतिहासिक घटना थी।

मोहनजी ने बाद में मुझे बताया कि जब वहां यह सम्मेलन करने का मैंने प्रस्ताव रखा तो भाई लोगों के कान फड़फड़ाये। कोई नहीं चाहता था कि इतना बड़ा सम्मेलन उस लघु-लघु गांव में, बड़े-बड़े लोगों की प्रसिद्धि में बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हो सकेगा। इसका सबको संशय भी था पर दृढ़ निश्चयी मोहनजी के तेरापंथ संघ के प्रति समर्पण तथा पुरुषार्थ से आचार्यश्री पूर्णतया आश्वस्त थे सो उन्होंने सरदारशहर में उपस्थित श्रावकों को दृढ़ता के साथ वरदासर विहार करने से पूर्व कहा भी कि वरदासर आने में जिसे आपत्ति हो वे यहीं रूक सकते हैं। उनके साधु-साध्वियों के दरवाजे हरिजन भाइयों के लिए सदा ही खुले हैं वहीं विद्वान् संत मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ) ने स्पष्ट किया कि अणुव्रत अभियान को बौद्धिक ऊंचाई देने तथा समतावादी समाज लाने के लिए अब नये मोड़ की जमीन तलाशनी जरूरी है।

तीन दिन का वह आयोजन अब भी मेरी आंखों के सामने तैर रहा है जब उसमें गृहमंत्री गुलजारीलाल नन्दा, भूतपूर्व गृहराज्यमंत्री जयसुखलाल हाथी, प्रख्यात साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार, जीवन साहित्य के सम्पादक यशपाल जैन, विसर्जन आश्रम इन्दौर के संन्यासी मानव मुनि, पारस भाई जैन, देवेन्द्र भाई कर्णावट तथा डॉ. मोहनसिंह मेहता जैसी जानीमानी हस्तियां उपस्थित हुईं। ये सब अणुव्रत की विचारधारा और गांधीवादी चिन्तना के प्रमुख हस्ताक्षर थे।

सैकड़ों लोगों की उपस्थिति लिये उस गांव में तम्बुओं से बना अणुव्रतनगर। अधिकांश छोटे-छोटे और कुछ बड़े झूंपड़ेमय मकान और प्रवचन पाण्डाल से वह लघुरूपा गांव सचमुच में बड़ी उपस्थिति, बड़ी हलचल, बड़ी उम्मीदों और बड़ी औकातों से रोशन-रोशन हुआ लकदका रहा था। बीच-बीच में स्वस्थ मनोरंजनी अणुव्रती विचारों की तड़का देती हमारी कठपुतली नाटिकाएं जैसे पूरे अधिवेशन पर छा गईं। उस गांव ने ही नहीं, सभी महारथियों ने भी पुतलियों के ऐसे प्रदर्शन देख दांतों तले अंगुली दबाते स्वीकार किया कि किसी भी आदर्श विचारधारा को स्थापित करने में कठपुतलियां बड़ी जबर्दस्त भूमिका निभा सकती हैं। संभवत: यही वह आधार रहा होगा जब सामरजी का अध्यक्षीय कार्यकाल बढ़ता गया और हम लोग भी अपने कलाकारों द्वारा पूरे प्रदर्शनों द्वारा गांव-गांव की कलाधर्मी खाक बुहारते ग्राम्यरंजन के साथ अपना कलाधर्मी सर्वेक्षण-अध्ययन पका सके। मुझे याद पड़ रहा है मैं भी अणुव्रत समिति का सदस्य बनाया गया। परिणाम यह रहा कि दिल्ली के अणुव्रत भवन में बैठकें होती रहीं और तदनुसार पूरे देश में अणुव्रत अनुष्ठान की परिव्याप्ति होती रही। सचमुच वह काल अणुव्रत के समग्र दौर का स्वर्णकाल ही सिद्ध हुआ जिसके साक्षी रहे उस दौर के वे मनीषी भी अब स्मृतिशेष हैं।

-म. भा.

बाजार / समाचार

जिंक की आईटी प्रणाली को एकीकृत आईएसओ प्रमाण पत्र

उदयपुर (वि.)। देश की सबसे बड़ी जिंक, लेड खनन कंपनी हिंदुस्तान जिंक को आईटी प्रणाली के लिए एकीकृत आईएसओ प्रमाण पत्र दिया गया है। इंफोर्मेशन मैनेजमेंट सिक्योरिटी सिस्टम के लिए 27001, आईटी डिजास्टर रिकवरी एंड बिजनेस कंटीन्यूटी के लिए आईएसओ 22301, प्राइवेसी इंफोर्मेशन के लिए आईएसओ 27701, आईटी रिस्क मैनेजमेंट सिस्टम के लिए आईएसओ 31000 शामिल हैं। इन प्रमाणपत्रों के साथ, कंपनी उन उद्योगों में शामिल हो गई है जो साइबर सुरक्षा, आईटी जोखिम, निरंतरता और गोपनीयता के डोमेन में उच्चतम शासन और नियंत्रण मानकों का पालन करते हैं। इस पर ट्वीट करते हुए जिंक के सीईओ अरुण मिश्रा ने कहा कि हिंदुस्तान जिंक अब साइबर सुरक्षा में उच्चतम शासन और नियंत्रण मानकों के साथ कॉर्पोरेट्स में से एक है। हमें इंटरटेक और यूकेएएस, यूनाइटेड किंगडम एक्रेडिट सर्विसेज द्वारा मान्यता प्राप्त एकीकृत आईएसओ सिस्टम के लिए प्रमाणित किया गया है।

'एंडो ट्रेनिंग स्किल डेवलपमेंट' पर वर्कशॉप

उदयपुर (वि.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं जॉनसन एंड जॉनसन के संयुक्त तत्वाधान में 'एंडो ट्रेनिंग स्किल डेवलपमेंट' पर दो दिवसीय वर्कशॉप आयोजित की गई। वर्कशॉप का उद्घाटन वाईस चांसलर डॉ. एफ.एस. मेहता ने किया। इस दौरान डीन डॉ. नरेन्द्र मोगरा, मेडिकल सुप्रीटेनडेंट डॉ. सुनीता दशोत्तर, जनरल सर्जरी विभागाध्यक्ष डॉ. पंकज सक्सेना भी मोजूद रहे। वर्कशॉप के अंतर्गत दूरबीन अथवा लेप्रोस्कोपिक/ दूरबीन द्वारा किये जाने वाले कौशल जैसे एंडो सुत्रिंग व नोटिंग ट्रेनर्स द्वारा सिखाई गयी। डॉ. पंकज सक्सेना ने कहा कि ऐसी वर्कशॉप में सीनियर सर्जन रेजिडेंट डॉक्टर्स को एंडो सुचरिंग सिमुलेटर पर दूरबीन से विभिन्न क्रियाएँ सिखाते हैं जिससे कि युवा सर्जनों में लेप्रोस्कोपिक / दूरबीन सर्जरी में आत्मविश्वास बढे एवं आगे चलकर कर आम जन को इसका लाभ मिले सके।

एचडीएफसी बैंक ने दिया 13000 करोड़ का एमएसएमई लोन

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक का राजस्थान में एमएसएमई लोन का आंकड़ा 13000 करोड़ रुपए के पार हो गया है। बैंक की लोन बुक ने 30 सितम्बर को पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 27 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। सरकार की ईसीएलजीएस योजना के तहत बैंक ने राजस्थान में 49,00 एमएसएमई यूनिट्स को अग्रिम वितरित किए। बैंक ने वर्ष 2006 में राजस्थान में एमएसएमईज को ऋण देना आरंभ किया। राज्य में पिछले 15 वर्षों के दौरान बैंक ने 50,000 (50,040) उद्यमों के लिए अग्रिम एवं समर्थित विकास योजनाओं की पेशकश की है। ये उद्यम प्रदेश में उद्यमिता की भावना को दर्शाते हैं जो राज्य के 33 जिलों को कवर करने वाले 141 शहरों और कस्बों के लिए आर्थिक विकास रीढ़ कहे जा सकते हैं।

एचडीएफसी बैंक के हेड बिजनेस बैंकिंग राजस्थान एवं गुजरात मनीष मोहन ने बताया कि एमएसएमई आर्थिक विकास की रीढ़ होते हैं, और यह उद्यम सर्वाधिक रोजगारश्रजित करते हैं। हमें इस बात का गर्व है कि हम अपने विश्वस्तरीय उत्पादों के साथ उनकी इस विकास यात्रा में भागीदार बने है।

मारेंगो एशिया हेल्थकेयर का सिम्स हॉस्पिटल में 450 करोड़ का निवेश

उदयपुर (वि.)। मारेंगो एशिया हेल्थकेयर ने अहमदाबाद के सीआईएमएस हॉस्पिटल में अघोषित हिस्सेदारी के लिए 450 करोड़ रुपये का निवेश करने की घोषणा की। इस निवेश के माध्यम से मारेंगो एशिया हेल्थकेयर ने नई क्लीनिकल पार्टनरशिप बनाने, लेटेस्ट मेडिकल और तकनीकी आविष्कार को ऑफर करने और सीआईएमएस हॉस्पिटल में ग्लोबल एक्सपर्टाइज को लाने की योजना बनाई है ।

सीआईएमएस हॉस्पिटल की स्थापना 2010 में हुई थी। हॉस्पिटल को डॉ. केयूर पारिख के नेतृत्व में हार्ट के डॉक्टरों की एक सम्मानित टीम द्वारा चलाया जाता है। हॉस्पिटल में पहले 125-बेड की सुविधा थी जिसे बढ़ाकर 330-बेड वाला मल्टी-सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल बनाया गया। मारेंगो एशिया हेल्थकेयर प्लेटफॉर्म के लिए यह पहला निवेश है। इसे समारा कैपिटल, हैवेल्स फैमिली इन्वेस्टमेंट ऑफिस और गोदरेज फैमिली इन्वेस्टमेंट ऑफिस द्वारा समर्थन दिया गया है।

जेके टायर को 31 प्रतिशत का शुद्ध लाभ

उदयपुर (वि.) । जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. (जेके टायर) ने चालू वित्तीय वर्ष 2021-22 की दूसरी तिमाही के लिए अन अंकेक्षित परिणाम घोषित किये हैं। कंपनी ने दूसरी तिमाही के दौरान 2998 करोड़ रूपये की शुद्ध आय पर 102 करोड़ रूपये का कर पूर्व लाभ अर्जित किया है। इस दौरान एबिडिटा 303 करोड़ रूपये का रहा।

जेके टायर के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि आंशिक रूप से बाधित बाजार के बावजूद जेके टायर बिक्री में निरन्तर विकास दर हासिल कर रहा है। रिप्लेसमेंट बाजार में जहां जबरदस्त विकास दर देखी गई, वही इस तिमाही में संस्थागत बिक्री में भी उछाल दर्ज किया गया। इनपुट लागत बढ़ने के चलते परिचालन लाभों पर असर पड़ा। बढी हुयी मात्रा एवं चयनात्मक कीमत वृद्धि से इसकी आंशिक रूप से भरपाई की जा सकती है। कम्पनी की सहयोगी इकाई-केवोन्डिश इण्डस्ट्रीज लि. का राजस्व वृद्धि में योगदान जारी है। मैक्सिको स्थित सहयोगी इकाई जेके टोर्नल ने भी अच्छा प्रदर्शन किया एवं आय व लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाई। देश की आबादी को टीकाकरण के अच्छे प्रयासों के चलते अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ है जो कि आने वाले समय में सही मायने में टायर उद्योग के लिये एक शुभ संकेत है।

एरिया ऑनलाइन प्लेटफार्म लांच

उदयपुर (वि.)। एचकेजी लि. सभी छोटे व्यापारियों को न सिर्फ एक साथ जोड़ता है बल्कि उनको वेब इंटरफेस और सेवाओं के जरिए आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। एचकेजी का विजन वेब इंटरफेस से जुड़ी सेवाओं को छोटे व्यापारियों के लिए सहज उपलब्ध करवाना है ताकि वे भी समय के साथ आगे बढ़ सके। कंपनी ने एरिया ऑनलाइन को गूगल प्लेस्टोर पर लांच किया है जिसका अच्छा प्रतिसाद भी मिल रहा है।

एरिया ऑनलाइन एक ऐसा एप्लीकेशन है, जो स्थानीय स्तर पर मौजूद बेहतरीन सेवाओं को व्यापारियों और ग्राहकों से जुड़ने का मौका देता है। एरिया ऑनलाइन ग्राहकों को उनकी मनपसंद सेवाओं और वस्तुओ को ढूंढने में सहायता करता है। साथ ही गुणवत्तापूर्ण संसाधन चुनने के लिए भी मौका देता है। यह सबकुछ रिव्यू के आधार पर उपलब्ध होता है। एरिया ऑनलाइन का सबसे महत्वपूर्ण फीचर यह है कि यह अपनी तयशुदा दुकान और सर्विसेज की पहचान पहले से ऑनलाइन इंटरनेट द्वारा पहचानने की सहयता करती है। कंपनी ने राइट इशू के द्वारा इक्विटी शेयर जारी करने की भी योजना बनाई है।

फारूक आफरीदी को अणुव्रत लेखक सम्मान

जयपुर (वि.)। भीलवाड़ा में आयोजित एक समारोह में प्रतिष्ठित कवि, पत्रकार फारूक आफरीदी को वर्ष-2020 का राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि लेखक की शब्द शक्ति से अन्तरात्मा का मूल भाव हजारों लोगों तक पहुंचता है और लेखक में निर्भीकता से विचार व्यक्त करने का सामर्थ्य पैदा होता है। आफरीदी ने कहा कि आचार्यश्री ने अणुव्रत को जीवन के हर क्षेत्र से जोड़कर इसे व्यापकता प्रदान की है।

उल्लेखनीय है कि अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत लेखक मंच द्वारा हर वर्ष एक प्रतिष्ठित लेखक को राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मान दिया जाता है।

प्रारंभ में अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष संचय जैन ने स्वागत किया और ललित गर्ग ने कार्यक्रम का संचालन किया।

10 करोड़ की लागत से बनने वाले 100 कमरे वाले हॉस्टल का शिलान्यास

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक इंजीनियरिंग महाविद्यालय परिसर में 10 करोड़ की लागत से बनने वाले 100 कमरे वाले पांच मंजिला हॉस्टल का शिलान्यास कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच, निदेशक डॉ. संजय बंसल, चीफ इंजीनियर एमसी सिंघवी ने विधि विधान एवं मंत्रोच्चारण के साथ किया।

प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि 50 हजार स्क्वायर फीट पर बनने वाले हॉस्टल के सभी कमरे आधुनिक सुविधाओं से युक्त होंगे। भवन के प्रथम तल पर कॉमन हॉल, डाईनिंग हॉल, जीम, लाईब्रेरी, वेटिंग रूम के साथ साथ विद्यार्थियों के अभिभावकों के लिए भी अलग से कमरे बनाये जायेंगे। कार्यक्रम में डॉ. उदयभानसिंह देवड़ा, डॉ. गजेन्द्रसिंह, इंजीनियर राजू शर्मा, प्रणय दाधीच, बंशीलाल, सारिकासिंह, ओम मालवीया, अशोक बिडला, सोहनलाल लौहार, अशोक मालवीय, प्रतापसिंह चौहान, सहित डीफार्मा एवं इंजीनियरिंग महाविद्यालय के कार्यकर्ता मौजूद थे।

श्रीराम सुपर 111 और 1-एसआर-14 गेहूं बीज से उत्पादकता में बढ़ोतरी

बांसवाड़ा (वि.)। डीसीएम श्रीराम लि. की युनिट श्रीराम फार्म सोल्यूशन्स की ओर से पेश किए गए श्रीराम सुपर 111 और 1-एसआर-14 गेहूं बीज से किसानों की उत्पादकता बढ़ी है। कई वर्षों से श्रीराम सुपर 111 गेहूं बीज राजस्थान के किसानों में बेहद लोकप्रिय हैं। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए पिछले वर्ष एक और उत्तम किस्म श्रीराम सुपर 1-एसआर-14 को उपलब्ध कराया गया जो किसानों की पहली पसंद बन रही है। श्रीराम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स के विश्वविख्यात गेहूं वैज्ञानिकों द्वारा इन किस्मों को तैयार किया गया है। श्रीराम सुपर 111 और 1-एसआर-14 गेहूं बीज किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं। इनका दाना मोटा और चमकदार है। इनसे चारा भी ज़्यादा मिलता है।

महिला बंदियों के साथ दीवाली मिलन

उदयपुर (वि.)। रोटरी क्लब उदयपुर मीरा की तरफ से गुरूवार को सेंट्रल जेल में महिला बंदियों के साथ दीवाली मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महिलाओं ने भजन, गरबा प्रस्तुत किये। महिला बंदियों को क्लब की तरफ से भोजन करवाया गया जिसमें दाल, बाटी, चूरमा, गट्टे की सब्जी, कढ़ी, चावल थे। सभी महिलाएं स्वादिष्ट भोजन पाकर पाकर बहुत खुश हुई। भोजन की व्यवस्था पुष्पा कोठारी एवं सोनल बोलियां की तरफ से की गई। इस दौरान क्लब अध्यक्ष सुषमा कुमावत, विजयलक्ष्मी गलुंडिया, हर्षा कुमावत, उर्मिला आदि मौजूद थीं।

सेना ने वीर भूमि को नमन किया, हम उन्हें नमन करते हैं : लक्ष्यराजसिंह मेवाड़

उदयपुर (वि.)। भारतीय सेना पिछले 20 दिनों से मेवाड़ ट्रेल एक्सपेडिशन के तहत 'मेवाड़ के वीरों के त्याग और बलिदान की धरती' को नमन करते हुए लोगों में देशभक्ति की अलख जगाने का काम रही है। एकलिंगगढ़ छावनी से 8 अक्टूबर को शुरू हुआ यह देशभक्ति का कारवां वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप-अकबर के बीच हुए विश्वप्रसिद्ध युद्धस्थल हल्दीघाटी, रणकपुर, कुंभलगढ़, दिवेर, चित्तौड़गढ़, चावंड होते हुए 550 किलोमीटर का पैदल फासला तय कर 27 अक्टूबर को महाराणा प्रताप स्मारक समिति मोती मगरी पहुंचा।

मोती मगरी पर आयोजित समारोह में समिति के अध्यक्ष लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि भारतीय सेना का विश्वप्रसिद्ध वीर भूमि मेवाड़ के ऐतिहासिक स्थलों और वीर-वीरांगनाओं को नमन करना मेवाड़ ही नहीं, बल्कि देशभर के बच्चों-युवाओं में देशभक्ति की अलख जगाना है। भारतीय सेना ने इन ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण के दौरान बच्चों और युवाओं को मेवाड़ के वीरों के त्याग-बलिदान और भारतीय सेना के पराक्रम ये रू-ब-रू कराया।

इससे पूर्व मोती मगरी पर भारतीय सेना ने प्रात: स्मरणीय महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उनकी वीरता को नमन किया। मेवाड़ ट्रेल टीम के सैनिकों ने मोती मगरी में निशान (झंडा) फहराकर मेवाड़ी परम्परा का निर्वहन किया। लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने 8 अक्टूबर को एकलिंगगढ़ छावनी में सेना को जो तलवार सौंपी थी, उस तलवार को सेना ने मेवाड़ को ससम्मान भेंट किया। इस अवसर पर लक्ष्यराजसिंह ने भारतीय सेना का मेवाड़ी परम्परानुसार सम्मान किया। भूतपूर्व सैनिकों, वीर नारियों और मेवाड़ ट्रेल टीम के सभी सदस्यों को स्मृति चिन्ह प्रदान किये गए। कार्यक्रम में ब्रिगेडियर शेखर, भारतीय सेना में रहे लेफ्टिनेंट जनरल एन.के. सिंह, कैप्टन ऋषभ सूरी, आरएनटी कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. लाखन पोसवाल आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

27 अक्टूबर का दिन भारतीय सेना के इतिहास में इन्फैन्ट्री दिवस के रूप में विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि 27 अक्टूबर 1947 को भारतीय सेना ने कश्मीर के अन्दर से पाकिस्तान के सैनिकों और घुसपैठियों को खदेड़ने का मिशन शुरू किया था।

लेफ्टिनेंट जनरल एन.के. सिंह ने बताया कि मेवाड़ ट्रेल एक्सपेडिशन का उद्देश्य आजादी की 75वीं वर्षगांठ 'आजादी का अमृत महोत्सव' और 1971 के युद्ध में भारत की पाकिस्तान पर ऐतिहासिक जीत के 50वां वर्ष 'स्वर्णिम विजय वर्ष' पर डेजर्ट कोर, बेटल एक्स डिविजन और नवीं ग्रेनेडियर्स (मेवाड़) द्वारा मेवाड़ की धरती और उसके वीरों को नमन करना था। अभियान में नवीं ग्रेनेडियर्स (मेवाड़) और कोनार्क कोर के 2 महिला अधिकारियों सहित कुल 70 सैनिक शामिल हुए।

भारतीय लोकनृत्यों.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

यह परम्पराओं का पोषक, संस्कृति का संरक्षक, सामाजिक सरोकारों का हेतालु एवं धर्म-कर्म के प्रति आस्थावान होता है। लोकगीत, लोकनृत्य, लोकोत्सव, लोकानुरंजन इसी समाज की धरोहर होते हैं।

इसके अलावा एक समाज और है- जनजातीय समाज। इस समाज में तो नृत्य जैसे जीवन का ही अनिवार्य हिस्सा है। इसमें स्त्री-पुरुष मिलकर नाचते हैं एक घेरे में। पंक्तिबद्ध होकर भी नाचते हैं। स्त्री-पुरुष अलग-अलग पंक्तियों में भी नाचते हैं तब पंक्ति आमने-सामने होती है। मोटे रूप में तो लोकनृत्य समूह की ही धरोहर है। समूह में ही यह खिलता है, फबता है, खिलखिलाता है। गीत-संगीत के बिना नृत्य अलूणा है, कोरा है, एकाकी है, गुमसुम है। उसका मजा ही उन्मुक्त होकर गाने में है। संगत वाद्यों की ऊंची गूंज देती स्वर-लहरियों के साथ चौकड़ी भरने में है। तारों भरे आकाश सी चन्द्र-किरणें छिटकाने, मुस्कान बिखेरने, हास्य छोड़ने, मुलकने, मजा देने और लेने में है। घेरघुमेर धरती पर किलकारी द्वारा किल्लोल करने में है। पाँव थिरकाने से लेकर आँखें मटकाने तक जितनी भी क्रिया-प्रतिक्रियाएँ और घुंघरु की छन-छनन से लेकर ढोल के ढम-ढम के साथ जितनी भी अदाकारियाँ हो सकती हैं वे सब नृत्य को बहु-शोभित, बहु-रूपायित एवं बहु-रंगायित करती हैं।

अलग-अलग समाज, जातियों और समूहों के नृत्यों की प्रकृति एक जैसी लगती हुई भी भिन्न-भिन्न होती है। जिस समाज, जाति और समूह का नृत्य होगा उसमें उसकी परम्परा, जातिगत गुण, समूहगत जीवनाचार की छाप ठसक और अन्तर्गठन मिलेगा। एक दूसरे की अच्छाई, वैशिष्ट्य और गुणों का प्रभाव भी नृत्यकार ग्रहण करता है। यही कारण है कि एक नृत्य की प्रति-छाया दूसरे नृत्य में देखने को मिलती है। आदिवासियों के नृत्य प्राय: एक जैसी चाल, रचना और छवि लिये दृष्टिगत होते हैं।

भारत राष्ट्र सचमुच अजूबा और वैविध्य भरा है। यहाँ जितने भी प्रांत हैं उन सबका अपना वैशिष्ट्य रहा है। सबके लोकानुरंजन और प्रदर्शन रंजन जुदा-जुदा हैं। लोकनृत्यों को ही लें तो उनमें जो विविधा-विविधता मिलेगी वही अचरज में डालनेवाली है। तब स्वाभाविक है, उन सबका एक जैसा वर्गीकरण भी संभव नहीं है। महाराष्ट्र के लोकनृत्यों के अध्ययन के दौरान मैंने पाया कि यहाँ एक ही नाम के लोकनृत्य का प्रचलन अलग-अलग वर्ग अथवा जातियों में है यद्यपि उसकी प्रदर्शनधर्मी कला के तत्व जुदा-जुदा हैं।

समय के बदलते परिवेश में लोकनृत्यों के पारम्परिक रूप-स्वरूप भी काफी बदले हैं। यह बदलाव समय की मांग और परिस्थिति की पकड़ से आया है। लोकधुनों की जगह सिनेमा के लोकप्रिय होते गीतों की धुनों ने ले ली है। पोशाक, सज्जा तथा कथ्य-विषय में भी बदलाव आया है।

कुछ लोकनृत्यों ने सरकारी प्रचारतंत्र के रूप में अपनी जगह बनाली है तो कुछ ने सरकार के उद्देश्यों के अनुरूप नृत्यों के माध्यम से गीति-रचना कर उद्देश्यपूर्ति में भागीदारी देना प्रारंभ कर दिया है। ऐसा कई प्रान्तों में हुआ है। अब अध्ययन के तौरतरीकों में भी बड़ा बदलाव आया है। एक ही वस्तु को कई अंदाजों में जांचा परखा जाने लगा है फिर लोकनृत्य तो अपनेआप में ज्ञान-विज्ञान की कई धाराओं को समाविष्ट किये हैं। ऐसी स्थिति में समाजशास्त्र, नृतत्वशास्त्र, साहित्य, संस्कृति, संगीत, नृत्य, वेशभूषा, रंगमंच, साजसज्जा जैसे कई विषयों में इनका पैना अध्ययन-विश्लेषण किया जा सकता है। तुलनात्मक दृष्टि से भी इनका अध्ययन रुचिपूर्ण बन सकता है।

'मूविंग बाउंड्रीज' लाई नारी सशक्तिकरण का संदेश

उदयपुर (वि.)। यूनाइटेड किंगडम स्थित चैरिटी शेल फाउंडेशन और यू के सरकार ने मूंविंग वुमन सोशल इनिशिएटिव फाउंडेशन (मोवो) के सहयोग से 'मूविंग बाउंड्रीज' नामक एक मुहिम शुरू की है। इसका मकसद महिलाओं को ड्राइविंग सीखने, ड्राइविंग करने के लिए प्रेरित करना है ताकि वे पारिस्थितिकीतंत्र की अड़चनों को दूर करते हुए ट्रांसपोर्टेशन उद्योग में बतौर टैक्सी और ई-रिक्शा ड्राइवर या ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए डिलिवरी एजेंट्स के रूप में अपने लिए रोजगार की बेहतर संभावनाएं तलाश सकें।

इस मुहिम के तहत मोवो की संस्थापक जय भारती अपनी मोटरसाइकल पर भारत का भ्रमण कर रही हैं। 11 अक्टूबर से शुरू की गई इस यात्रा में वे 40 दिनों में देश के 20 शहरों में जाकर महिलाओं को ड्राइविंग सीखकर अपने लिए रोज़गार के मौके बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करेंगी। अपने इसी दौरे के तहत गत दिनों सुश्री भारती उदयपुर पहुंची। हैदराबाद से अपने टूर की शुरुआत करने वाली भारती बंगलुरू, चैन्नई, कोची, गोवा, पुणे, मुंबई, सूरत, अहमदाबाद का सफर तय कर चुकी हैं। इसके बाद वे जयपुर, अमृतसर, श्रीनगर, चंडीगढ़, नई दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी, पटना, गुवाहाटी, कोलकाता, रांची, भुवनेश्वर जैसे कई अन्य शहरों में जाएंगी।

प्रेसवार्ता में जय भारती ने कहा कि इस मुहिम का मकसद है कि महिलाएं इस बात के प्रति जागरुक हों कि ड्राइविंग और अकेले सुरक्षित यात्रा करना कितना जरूरी है क्योंकि इससे वे अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी अनेक संभावनाओं का विस्तार भी कर सकती हैं। मुहिम का ज़ोर न सिर्फ इस बात पर है कि महिलाएं ड्राइविंग सीखें बल्कि इलेक्ट्रिक वाहन भी खरीदें, जिससे वे कमाई कर सकें और साथ ही ट्रांसपोर्ट क्षेत्र से कार्बन एमिशन (उत्सर्जन) भी कम किया जा सके।

शेल फाउंडेशन की श्रीमती शिप्रा नायर ने कहा कि मूविंग बाउंड्रीज़ की शुरुआत महिलाओं के लिए सुरक्षित, किफायती, और स्वच्छ ट्रांसपोर्टेशन को बढ़ावा देने के मकसद से की गई है ताकि वे बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और नौकरियां प्राप्त कर सकें।

मेहता को मनीषी पंडित जनार्दनराय नागर मेमोरियल अलंकरण अवार्ड

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विवि में शिक्षा, नवाचार एवं युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य पर नर्मदा बाल घर मोरवी गुजरात के संस्थापक भरत भाई मेहता को 'मनीषी पंडित जनार्दनराय नागर मेमोरियल अलंकरण अवार्ड 2021' से कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय जानी, कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच, प्रो. सुमन पामेचा, प्रो. मंजु माण्डोत, प्रो. गजेन्द्र माथुर ने नवाजा। पुरस्कार के तहत 51 हजार रूपये नकद, रजत व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर मेहता ने विद्यापीठ 25 श्रीडी प्रिन्टर देने की घोषणा की।

प्रो. जानी ने कहा कि मेवाड़ ने राष्ट्र को ऐसे शिक्षक दिए जिन्होंने भारतीय जनमानस में आजादी की अलख जगाई। प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि रोजगार प्रदान करने वाली शिक्षा की आज महत्ती आवश्यकता है। वर्तमान में सम्पूर्ण देश में राजगारोन्मुखी शिक्षा पर ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की और से किये जा रहे नवाचारों में सबसे महत्वपूर्ण मेवाड़ के 100 गांवों को गोद लेकर वहां आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के माध्यम से दिशा व दशा में बदलाव करने की और कार्य किया जायेगा।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (14)

-देवीलाल सामर -

दूसरे दिन प्रात: 10 बजे समारोह का अन्तिम दिवस था। रूमानिया के प्रधानमंत्री उसकी अध्यक्षता कर रहे थे। प्रतियोगिताओं के निर्णय भी उसी दिन सुनाये जाने वाले थे। फोटोग्राफर और फिल्म बनाने वालों का अम्बार लगा हुआ था। समस्त समारोह भवन की भव्य सजावट की गई थी। समारोह की रिपोर्ट बांटी गई और समस्त दलों की ओर से मुझे बोलने का आदेश हुआ। मैं जब अंग्रेजी में बोलने लगा तो अधिकारियों में से कुछ ने आवाज लगाई, इंडियन-इंडियन अर्थात् हिन्दुस्तानी में बोलें।

मैंने हिन्दी में बोलना शुरू किया। तत्काल हिन्दी जानने वाले दुभाषिये भीड़ चीरकर मेरे पास खड़े हो गये जो अंग्रेजी, फ्रैंच, जर्मन एवं रूमानियन भाषा में मेरे भाषण का अनुवाद करने लगे। मैंने कहा कि इस समारोह आकर हम सब प्रतिनिधि अपनेआप को धन्य मानते हैं तथा यहां की सुव्यवस्था के लिए आप सबको बधाई देते हैं। भारत की ओर से विशेष आभार प्रदर्शित करते हुए जब मैंने यह कहा कि मुझे अफसोस है कि हम भारतीय पुतलियों को भव्य रूप में आपके सामने प्रस्तुत नहीं कर सके तो दर्शक समुदाय में से अनेक बोल उठे, नहीं-नहीं। मैं घबराते होठों को बन्द कर लड़खड़ाते पांवों से अपने स्थान पर लौटा।

आधुनिक और पारम्परिक पुतलियों के दो प्रमुख प्रथम पुरस्कार तो सर्वश्रेष्ठता के थे ही साथ ही सर्वश्रेष्ठ संगीत, सर्वश्रेष्ठ स्क्रीप्ट, सर्वश्रेष्ठ निर्देश, सर्वश्रेष्ठ रंग-सज्जा आदि के भी विविध पुरस्कार थे। सभी छोटे-छोटे पुरस्कारों की घोषणा पहले हुई और उनके साथ कैश प्राइज भी बंटते रहे। अन्तिम घोषणा थी सर्वश्रेष्ठ पुरस्कारों की। जब यह घोषणा हुई कि आधुनिक पुतलियों का पुरस्कार दो मुल्कों रूमानिया और पौलेण्ड में बंट गया है तो थोड़ी सी सनसनी फैल गई। दोनों ही देशों के दल इतने श्रेष्ठ थे कि उन्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने की पूरी आशा थी। दोनों के नेताओं को बुलाया गया। दस हजार का प्राइज पांच-पांच हजार की दो थैलियों में दोनों को वितरित कर दिया गया साथ ही पुरस्कार का प्रमाणपत्र भी।

हम तो भीड़ से बचने के लिए दरवाजे तक लौट भी चुके थे। उसी समय पारम्परिक पुतलियों का पुरस्कार घोषित हुआ। उसके साथ जब भारत का नाम जुड़ा तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। पांवों के नीचे जैसे जमीन ही नहीं थी। आंखों के सामने रंगबिरंगी चकाचौंध कौंध गई। अधिकारियों का एक दल मुझे पकड़कर मंच पर ले जाने लगा तो मैंने कहा, दल का नेता मैं नहीं मेरा यह लड़का है। गोविन्द की आंखों से आंसू टपक पड़े। उसने तुरन्त मेरे पांव छुए और जैसे ही मंच की ओर बढ़ने लगा कि लोगों ने उसे कंधों पर उठा लिया। वह कंधों ही कंधों पर मंच तक पहुंच गया।

प्रधानमंत्री ने गुलदस्ता भेंट किया। हाथ मिलाया। प्रथम पुरस्कार का तमगा लगाया। प्रमाणपत्र दिया साथ में 10,000 रूपये के पुरस्कार की थैली भी दी। बधाइयों की वर्षा होने लगी। डॉ. जॉन मलिक के अंगूठे का रहस्य आज समझ में आया। वह भारत की तरह अभिशाप का नहीं, वरदान का प्रतीक होता है।

मैं नानाप्रकार के विचारों में पड़ गया। गोविन्द लपकता हुआ मेरी तरफ आया और कई क्षणों तक मेरी बाजुओं में सिमटा रहा। मुझे समझ में नहीं पड़ रहा थी कि यह सब हुआ क्या? हम सर्वश्रेष्ठ कैसे हो गये? बधाइयां देने वालों ने नानाप्रकार की समीक्षा की।

प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के साथ देवीलाल सामर और उनके कठपुतली कलाकार

एक ने कहा, आपकी पुतलियों की मौलिकता ही प्रथम पुरस्कार के लिए उत्तरदायी थी। दूसरे ने कहा, उनकी रंगीनियों ने निर्णायकों का मन हर लिया। तीसरे ने कहा, उनके प्रस्तुतिकरण रूप-रंग, संचालन, बनावट आदि में किसी आधुनिक प्रसाधन, उपकरण का प्रयोग नहीं किया।चौथे ने कहा, आपकी पुतलियों ने कम-से-कम धागों में अधिकाधिक भाव एवं अंग-भंगिमाएं थीं वही सबसे बड़ा चमत्कार था।

यह तो था ही कि पुतलियां चलाने में हमने किसी भी यांत्रिक प्रसाधन का उपयोग नहीं किया। वे सीधी अंगुलियों से लिपटी थीं जो हृदय के स्पंदन एवं रक्त-शिराओं की धड़कन के साथ अनुप्राणित हो रही थीं। वही पुतलियों की प्राणवान शक्ति था।

दूसरे दिन रूमानिया के सभी अखबार हमारी तारीफों से भरे पड़े थे। किसी ने लिखा, भारत की जादुई पुतलियों ने वास्तव में सब पर जादू कर दिया तो किसी ने लिखा, पिछले तीन समारोह में इस प्रकार की मौलिक पुतलियां कभी नहीं आईं। यह भी लिखा गया, सचमुच में भारतीय पुतलियां ही विश्व-पुरस्कार पाने की अधिकारिणी थीं।

पुरस्कार पाने का आलम यह रहा कि हमारे पास अनेक मुल्कों के निमंत्रण आने लगे पर हम एक निश्चित अवधि तक के लिए ही आये थे।

पुरस्कार की सूचना मैंने सबसे पहले भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के पास तार द्वारा भेजी। तुरन्त उनका बधाई का तार भी आ गया। लिखा था, भारत के लिए यह गर्व की बात है कि आप पुरस्कृत हुए हैं। इसके बाद पत्राचार से पता लगा कि इस पुरस्कार का स्वागत विविध पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो आदि ने बड़े सुन्दर ढंग से किया और कई दिनों तक इसकी चर्चा देश में चलती रही। हमने समारोह के सभी भागीदारों को एक भव्य दावत दी। रूमानिया से हम लोग बर्लिन में गये। वहां कई दिनों तक प्रदर्शन होते रहे। उसके बाद म्युनिक हेमबर्ग, कोलोन, हाइडन हाइन आदि शहरों में हमने अपने प्रदर्शनों से धूम मचादी। हेमबर्ग में तो सात दिन ठहरे जहां टीवी ने हमारी पूरी रेकार्डिंग की। पेरिस में भी हमने प्रदर्शन दिये। हमारी डोक्युमेन्ट्री फिल्म बनाई गई। रोम, लंधन, पादुआ, हकीला, फ्लोरेंस आदि शहरों में भी हमारे प्रदर्शनों ने धूम मचाई। पादुआ में जो हुआ वह तो स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। यहां यूरोप का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। यहां एक विशिष्ट समारोह में हमें जो मेडल दिया गया वह सर्वोच्च मान्यता प्राप्त व्यक्तियों को ही दिया जाता है।

21 नवम्बर को हम बम्बई पहुंचे। शान्ताक्रुज एयरपोर्ट पर हमारे पासपोर्ट देखे गये। वह वेलिड था केवल 25 सितम्बर तक। तीन माह ऊपर निकल गये। यह जघन्य अपराध था। वहीं रोक लिये गये। हमने अपने सब हालात सुनाये। पुरस्कार के प्रमाणपत्र भी सामने पेश कर दिये। एयरपोर्ट पर सनसनी-सी फैल गई कि पुतली के विश्व विजेता बम्बई पहुंचे हैं। उन्हें पुलिस ने रोक दिया है। हम तस्कर नहीं थे। न चोर लुटेरे थे। न हमारे पास कोई गुप्त विदेशी मुद्रा थी। जो थी उसे हमने सम्मानपूर्वक पहले ही बैंक में सरेंडर कर दिया था। वह मुद्रा भी 30,000 हजार रूपये की कीमत की मुद्रा से कम नहीं थी। पूरी ईमानदारी के साथ हमने विदेशों में खरीदी हुई समस्त सामग्री एयरपोर्ट अधिकारियों के सामने रख दी। उसके साथ ही हमारे वे सब प्रमाणपत्र एवं अखबारों की कतरने भी उनके सामने रख दी।

वे स्वयं खुशी के मारे फूले नहीं समा रहे थे। तारीफों के पुल बांध रहे थे। आप लोग क्या वे ही लोग हैं जिनके लिए प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने रेडियो इंटरव्यू में बड़ी प्रशंसा की थी। क्या आपने ही पुतलियों का प्रथम विश्व पुरस्कार प्राप्त किया था। धन्य है आपको। आशा है, आप हमारी लाचारी का अहसास कर रहे होंगे। हम कर्त्तव्यबद्ध हैं परन्तु दिल तो ऐसा करता है कि आपके कदम चूम लें। आपकी उन ऊंगलियों को चूम लें जिन्होंने इस विश्व समारोह में इन प्रथम पुरस्कृत पुतलियों को चलाया था। आपकी प्रशंसात्मक बातें इधर भारतीय अखबारों में खूब छपी है। हमने खूब ध्यान से उन्हें पढ़ा है। रेडियो ने भी आपके बारे में खूब कहा है।

आप ठहरिये हमने अपना एक प्रतिनिधि महाराष्ट्र सरकार के विदेश विभाग के पास भेजा है, भगवान ने चाहा तो शीघ्र ही आपका निपटारा हो जायगा। तब तक पुलिस अधिकारियों ने हमारे लिये चाय मंगवाई। किसी ने बादाम एवं काजू के पैकेट मंगवाये। हमारे लिये कुर्सियां मंगवाई गई। लगभग डेढ़ घंटे आद एक आदमी लपकता हुआ आया। उसके हाथ में एक लिफाफा था जिसमें हमारे एक्टेंशन का हुक्म था जो बर्लिन से भेजे हुए हमारे आवेदन के उत्तर में था। उसमें हमें भारत में प्रवेश की अनुमति थी।

दो दिन बाद उदयपुर भी लौट आये। उदयपुर के नागरिकों ने हजारों की तादात में हमारा स्वागत किया। बैण्डबाजों के साथ कलामण्डल तक जुलूस में पहुंचाया गया। जैसे ही मैं दफ्तर में पहुंचा, वहां टेबल पर पत्र एवं तारों के ढेर लगे थे। एक पत्र में शिक्षा मंत्रालय का वह पत्र भी था जिसमें हमारी 35,000 रूपये की सहायता सारी बहाल कर दी गई थी। इस खुशी में कि हम भारत के लिए गौरव प्राप्त करके जाये हैं। भारतीय लोककला मण्डल के लिए ही नहीं, समस्त भारत के लिए यह सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

जब हम पादुआ से रेल द्वारा रोम आ रहे थे, उसी समय गोविन्द के पेट में जोरों का दर्द चला। रोम में उसका प्राथमिक उपचार हुआ और वह दर्द रूक भी गया। उदयपुर में उसे पुन: दर्द चालू होगया। उसका चेहरा दिन-दिन पीला पड़ता गया और उसकी शक्ति क्षीण होने लगी। डाक्टरों ने उसकी बीमारी पीलिया बतलाया। आराम उसके लिए हराम था। इलाज भी बार-बार बदलता रहा। इधर संस्था का आर्थिक संकट भी बढ़ता चला गया। विकास के सभी कार्य धनाभाव के कारण अवरूद्ध हो गये। हॉस्पिटल के सभी डाक्टर गोविन्द के दोस्त थे। धीरे-धीरे उसकी तबीयत बहुत गिर गई। डाक्टरों ने मुझे खतरे की घंटी देदी। प्रतिपल मेरी नजर उसके गालों पर पड़ती तो वह अपनी डबडबाई आंखों से यही कहता कि आप घबराइये नहीं, मैं ठीक हो जाऊंगा पर ऐसा हुआ नहीं। अन्तत: मेरी गोदी में ही उसके प्राण पंखेरू उड़ गये। **- समाप्त**

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।